अक्टूबर-२०२२ ◆ वर्ष ११ ◆ अंक ०६ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

अक्टूबर-२०२२

लाखों बुझते दीप जलाकर,
जग को नया प्रकाश दे गये।
रूके–थमे–ठिठके पैरों को,
गति का नया विकास दे गये।
मानवता के अभ्युदय हित,
तुम सत्यार्थप्रकाश दे गये।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹१५ १३२

स्वाद की दौड़ में, सबसे आगे
MDH
MDH
मसाले
सेहत के रखवाले
असली मसाले सच - सच
पद्मभूषण
महाशय धर्मपाल जी
संस्थापक चेयरमैन, एम.डी.एच. (प्रा०) लि०
Garam masala
Chunky Chat masala
Chana masala
Kitchen King
Shahi Paneer
PEACOCK
KASOORI METHI
Achari Aloo masala
अचारी आलू मसाला
Veg Biryani masala
वेज बिरयानी मसाला
Karahi Paneer masala
कड़ाही पनीर मसाला
DEGGI MIRCH
CHILLI POWDER
For More Information Visit us on :
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
SpicesMdh
www.mdhspices.com
SCAN FOR MDH
ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमाँसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	11000 रु.	$ 1250
आजीवन	1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	600 रु.	$ 125
वार्षिक	150 रु.	$ 30
एक प्रति	15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर खाता संख्या : 310102010041518 IFSC CODE- UBIN 0531014 MICR CODE- 313026001 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२२
आश्विन शुक्ल द्वादशी
विक्रम संवत्
२०७९
दयानन्दाब्द
१९८

October - 2022

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 5000 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.

०९ कैसे हो पापा आप ?

वेद सुधा	०४
सत्यार्थ मित्र बनें	०८
चिन्ता छोड़ो सुख से जियो	१४
सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०८/२२	१६
डाकिया डाक लाया	१७
स्वास्थ्य-मोटापा	१८
लक्ष्मी का स्वयंवर	१९
ऋषि दयानन्द मेरी दृष्टि में	२१
गुलाम नबी.....	२२
आर्य समाज और ईश्वर	२३
आर्य समाज की रक्षा	२५
कथा सरित	२७
ईश्वर और ईश्वरकृत पुस्तक	३०

समाचार २८

हलचल २९

स्वामी — श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ११ अंक -०६

मुद्रण — द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

मनुष्य बन

तन्तु तन्वन्रजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान्।
अनुल्बणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।। - ऋग्वेद १०/५३/६

रजसः- संसार का, **तन्तुम्**- ताना-बाना, **तन्वन्**- तनता-बनुता हुआ भी, **भानुम्**- प्रकाश के, **अनु-इहि**- पीछे जा। **धिया**- बुद्धि से, **कृतान्**- बनाये हुए, परिष्कृत किये हुए, **ज्योतिष्मतः**- ज्योतिर्मय, प्रकाशयुक्त, **पथः रक्ष**- मार्गों की रक्षा कर, **जोगुवाम्**- निरन्तर ज्ञान और कर्म का अनुष्ठान करनेवालों के, **अनुल्बणम्**- उलझनरहित, **अपः**- कर्म को, **वयत**- विस्तृत करो। (इन उपायो से) **मनुः भव**- मनुष्य बन, (और) **दैव्यम्**- देवों के हितकारी, **जनम्**- जन को, सन्तान को, **जनया**- (जनय) उत्पन्न कर।

व्याख्या

संसार को सदा जिसकी आवश्यकता रही है और रहेगी तथा इस समय भी जिसकी अत्यन्त आवश्यकता है, उस तत्व का उपदेश इस मन्त्र में किया गया है। वेद में यदि और उपदेश न होता, केवल यही मन्त्र होता, तब भी वेद का आसन संसार के सभी मतों और सम्प्रदायों से उच्च रहता।

वेद कहता- मनुर्भव- मनुष्य बन।

आज का संसार ईसाई बनने पर बल देता है, अर्थात् ईसा का अनुकरण करने के लिए यत्नवान् है। संसार का एक बड़ा भाग बौद्ध बनने में लगा हुआ है, अर्थात् बुद्ध के चरणचिह्नों पर चलता हुआ 'बुद्धं शरणं गच्छामि' का नाद गुंजा रहा है। इसी प्रकार संसार का एक भाग मुहम्मद का अनुगमन करने में तत्पर है। महापुरुषों का अनुकरण प्रशंसनीय है, किन्तु थोड़ा-सा विचार करें तो एक विचित्र दृश्य सामने आता है, अद्भुत तमाशा देखने को मिलता है। ईसाई ने ईसा का नाम लेकर जो कुछ अपने भाईयों के साथ किया, उसकी स्मृति ही मनुष्य को कम्पा देती है। बिल्ली के बच्चे तक की रक्षा करने वाले मुहम्मद की उम्मत का इतिहास भी भाईयों के रक्त से रंजित है। जिसे मनुष्य कहते हैं, वह मनुष्यता का वैरी हो रहा है। हमने संकीर्णता के संकुचित दल बना डाले। एक दल दूसरे दल को दलने, कुचलने पर तत्पर है। आज मनुष्य मनुष्य का वैरी हो रहा है, अतः वेद कहता है- मनुर्भव- मनुष्य बन। ईसाई या बौद्ध या मुसलमान बनने या किसी दूसरे सम्प्रदाय में, सम्मिलित होने में वह रस कहाँ, जो 'मनुष्य' बनने में है। ईसाई बनने से केवल ईसाईयों को ममत्व से देखूँगा। बौद्ध होने से अन्य सबको असद्धर्मी मानूँगा। मुसलमान होकर मोमिनों को ही अपने प्यार का अधिकारी मानूँगा, किन्तु मनुष्य बनने पर तो सारा संसार मेरा परिवार होगा, सब पर मेरा एक समान प्यार होगा। वसुधा को कुटुम्ब माना, तो सारे कुटुम्ब से प्यार करना चाहिए। कुटुम्ब में समता का साम्राज्य होता है। विषमता का व्यवहार कुटुम्ब की एकतानता पर वज्रप्रहार है। समता स्थिर रखने के लिए स्नेही का व्यवहार करना होता है, तभी तो वेद ने कहा-

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।। - यजुर्वेद ३६/१८

सबको मित्र की स्नेहसनी आँख से हम देखें।

यहाँ वेद मनुष्य-सीमा से भी आगे निकल गया। प्यार का अधिकारी केवल मनुष्य ही न रहा, वरन् सब भूत-प्राणी हो गये। यह उचित भी है, क्योंकि 'मनुष्य' शब्द का अर्थ है- **'मत्वा कर्माणि सीव्यति'** (निरुक्त ३/७) जो विचार कर कर्म करे, अन्धाधुन्ध कर्म न करे। कर्म करने से पूर्व जो भली प्रकार विचारे कि मेरे इस कर्म का क्या फल होगा? किस-किस पर इसका क्या-क्या प्रभाव होगा? यह कर्म भूतों के दुःख-प्राणियों की पीड़ा का कारण बनेगा या भूतहित साधेगा? मनुष्य यदि सचमुच मनुष्य बन जाये तो संसार से सारा उपद्रव दूर हो जाए। देखिए, थोड़ा विचारिए; थोड़ा-सा मनुष्यत्व काम लाइए। वेद के इस उपदेश के महत्व को हृदयंगम कीजिए।

धार्मिक दृष्टि से विचार करें, तो मनुष्य समाज के दो बड़े विभाग बन सकते हैं- एक ईश्वरवादी, दूसरा अनीश्वरवादी। सभी ईश्वरवादी ईश्वर को 'पिता' मानते हैं। वेद इससे भी आगे जाता है, वह ईश्वर को पिता के साथ माता भी मानता है। यथा-

त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ। अधा ते सुम्नमीमहे।। - ऋग्वेद ८/९८/११

अर्थात् सबको ठिकाना देनेवाले! सचमुच तू हमारा पिता है। जीवों के उत्पत्ति आदि नानाविध कर्म करनेवाले परमात्मन्! तू हमारी माता है, अतः हम तेरा उत्तम हृदय (Good wishes) चाहते हैं।

माता-पिता की शुभाशीष, शुभकामना सन्तान का कितना कल्याण करती है? परमपिता दिव्य माता की भव्यभावना हमारा कितना इष्ट कर सकती है, इसकी पूरी कल्पना कौन कर सकता है? प्रभु हमारे माता-पिता, हम उनकी सन्तान, किन्तु कुसन्तान, जघन्य सन्तान, अयोग्य सन्तान, विद्रोही सन्तान। हम आपस में लड़ते हैं। भाई-भाई की लड़ाई! भगवान् ने कहा था-

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। - ऋग्वेद १०/१९१/२

तुम्हारी चाल एक हो, तुम्हारे बोल एक हों, तुम्हारा ख्याल एक हो।

हमारी चाल आज भिन्न-भिन्न ही नहीं, परस्पर विरुद्ध हैं। आज हम संवादी नहीं, विवादी हो गये हैं। आज हम 'संवाचः' नहीं 'विवाचः' हो गये हैं। इसका कारण हमारा 'वैमनस्य' मनोभेद=मतभेद=विचारभेद है। एक चाल=संगति, एक बोल=सम-उक्ति के लिए 'सांमनस्य'=मत की एकता, मत की अभिन्नता, विचार की समता की आवश्यकता है। पिता का आदेश है, माता का सन्देश है- **सं गच्छध्वम्।** हम उसके विपरीत चलकर पिता का अधिकार, माता का प्यार कैसे पा सकते हैं। मानव! ठहर! सोच! कहाँ चला गया? कहाँ बिदक गया? मैं बिदक गया! बहक गया! वज्रभान्ति! ईश्वर-ईश्वर कह रहे हो। कहाँ है ईश्वर? जब ईश्वर ही नहीं, तब उसका माता-पिता होना कैसे? और हम सब मनुष्य 'भाई-भाई कैसे? **सति कुडये चित्रम्-** आधार होगा, तो चित्र बनेगा?

अच्छा! ईश्वर को ही जवाब देने दो, तुम्हारा मन ईश्वर को नहीं मानता, न सही, भगवान् का मानना बड़े भाग्य की बात है, किन्तु भगवान् को न मानकर भी मानव-मानव का भाई है।

कैसे?

सुनो! सावधान होकर सुनो। तुम दो की सन्तान हो न! घबराने क्यों लगे? इसमें अचम्भे की बात ही क्या है? माता और पिता के संयोग से ही मनुष्य की उत्पत्ति होती है। अकेली स्त्री से सन्तान नहीं हो सकती। अकेले पुरुष से कुछ नहीं बनता। सृष्टि चलाने के लिए स्त्री-पुरुष का, प्रकृति-पुरुष का, रयि-प्राण का संयोग आवश्यक है, अर्थात् दो मिले, तो तुम एक आये, अर्थात् तुम में दो का रुधिर आया और ये दो भी तो दो-दो के सन्तान हैं, अर्थात् हममें चार का रुधिर आया। उन चार के जो और सन्तान हुये, उनमें भी उनका रुधिर आया। कहो, वे और तुम सब सपिण्ड हुए या नहीं? तनिक और आगे चलो, वे चार आठ के सन्तान, वे आठ सोलह के, इस प्रकार ज्यों-ज्यों ऊपर को जाओगे, अपना खून का सम्बन्ध बढ़ता हुआ पाओगे। कहो, हुए न हम भाई-भाई।

बताओ, भाई-भाई का व्यवहार कैसा होना चाहिए? क्या भाई-भाई का गला काटे, यह अच्छा है अथवा भाई के पसीने के बदले अपना खून बहा दे, यह अच्छा है?

भाई को भाई से भय नहीं होता। भाई को अपने से अभिन्न माना जाता है। डर होता है दूसरे से- **द्वितीयाद्वै भयं भवति।** भाई को देखते ही हृदय हर्षित हो उठता है। आ! विश्व को- संसार को भाई बना। भय को भगा। सर्वत्र निर्भय, निष्कण्टक आ और जा।

कहो, वेद का **'मनुर्भव'** कहना कल्याणसाधक है या नहीं?

निस्सन्देह मनुष्य बनना संसार में शान्ति-स्थापन करने का एक मात्र साधन है। सभी मनुष्य 'मनुष्य बन जाएँ' तो यह मार काट, यह लूट-खसूट उसी क्षण समाप्त हो जाए, किन्तु यह है अत्यन्त कठिन।

निस्सन्देह मनुष्यत्व प्राप्त करना अत्यन्त कठिन है। शंकराचार्य जी ने कहा- **'जन्तूनां नरजन्म दुर्लभम्'**। सचमुच नर तन पाना दुस्साध्य है, किन्तु असाध्य नहीं। वेद इससे आगे जाता है। वेद कहता है- मनुष्य जन्म, नरतन तो तूने प्राप्त कर लिया 'मनुष्य' भी बन। **केवल नर तनधारी ही न रह, नर मनधारी भी बन। इसी लिए वेद ने कहा- 'मनुर्भव।'**

यद्यपि **'मनुर्भव'** कहने से ही सब बात आ गई है, किन्तु भगवती श्रुति उसके उपाय भी देती है। वैसे तो सारा वेद ही नर-तनधारी को मनुष्य बनाने के लिए है, किन्तु इस मन्त्र में जो कुछ कहा है, उस पर भी यदि आचरण किया जाए तो अभीष्ट सिद्ध हो जाए।

मनुष्य बनने का पहला साधन है-

'तन्तुं तन्वन् रजसो भानुमन्विहि।'

संसार का ताना बाना बुनता हुआ भी तू प्रकाश का अनुसरण कर, अर्थात् तेरे समस्त कर्म ज्ञानमूलक होने चाहिए। अज्ञान, अन्धकार तो मृत्यु के प्रतिनिधि हैं। अन्धकार से उल्लू को प्रीति हो सकती है, मनुष्य को नहीं। मनुष्य बनने के लिए अन्धकार से परे हटना होगा। ऋषि ठीक ही कहते हैं-

तमसो मा ज्योतिर्गमय। - शत. १४/३/१/३०

अन्धकार से हटाकर मुझे प्रकाश प्राप्त करा।

अन्धकार में कुछ नहीं सूझता, सब क्रियाएँ रुक जाती हैं, अतः वेद कहता हैं- **भानुमन्विहि**।

प्रकाश के पीछे चल।

प्रकाश का अनुसरण करना मात्र ही पर्याप्त नहीं है। कुछ और भी आवश्यक होता है। प्रकाश के पीछे तभी चला जा सकेगा, जब प्रकाश स्थिर होगा। यदि प्रकाश विद्युच्छटा के समान चंचल हो, तो उसका अनुकरण कैसे हो सकता है, इस आशय को लेकर वेद ने दूसरा उपाय बताया-

ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान्।

प्रकाश के मार्गों की रक्षा कर, उनमें अपनी बुद्धि से परिष्कार कर।

संसार के सभी देशों में रौशनी बुझानेवालों के लिए दण्ड का विधान है, किन्तु संसार की गति अत्यन्त विचित्र है। संसार में ऐसे भी हुए हैं और कदाचित् आज भी ऐसे मनुष्याकारधारी प्राणी हैं, जो प्रकाश का नाश करते रहे और कर रहे हैं। उन्हें क्या कहोगे, जिन्होंने सिकन्दरिया का विशाल पुस्तकालय जला दिया। उन्हें क्या कहोगे, जो वर्षों भारत के ज्ञान भण्डार से हमाम=स्नानागार गर्म करते रहे? उनका क्या नाम धरोगे, जिन्होंने चित्रकूट का करोड़ों रुपयों का पुस्तकालय अग्निदेव की भेंट कर डाला? ये सभी नर तनधारी थे, किन्तु क्या ये मनुष्य नाम के भी अधिकारी थे, इसमें सन्देह है। मनुष्य बनाने का साधन नष्ट करने वाले मनुष्य कैसे? वे तो कोई मनुष्यता के वैरी थे। उनको क्या कहोगे, जो आज भी ज्ञान भण्डार को जलदेवता के अर्पण कर रहे हैं? उनको क्या कहोगे, जो प्रकाश को दूसरों तक नहीं जाने देते, अपने तक रोके रखते हैं? ये सब......। लाखों ज्ञानी ज्ञान अपने साथ ले जाते हैं। वह ज्ञान किस काम का? वेद कहता है- **ज्योतिष्मतः पथो रक्ष-** ज्ञानमार्गों की रक्षा कर। पूर्वजों से प्राप्त ज्ञानराशि की रक्षा कर।

मानव! तू वायुयान में बैठकर आकाश की ओर उड़ जाता है, अन्तरिक्ष की सैर करता है। ज्ञात है यह कैसे सम्भव हो सका? वेद के **'अन्तरिक्षे रजसो विमानः'** की बात नहीं कहूँगा और न ही कहूँगा रामायण के पुष्पक विमान की बात। आज के विमान का बयान सुनाऊँगा। किसी भद्र के चित्त में पक्षी को उड़ता देख उड़ने की समाई। उसने कृत्रिम पंख लगाकर उड़ने की ठानी। बेचारा गिर पड़ा, अंग भंग हो गये। अगलों ने उसकी चेष्टा को स्मरण रखा, उसके यत्न को मूलाधार बनाया; साथ ही उसमें अपना मष्तिष्क लगाया। अब सोच मानव! यदि उस प्रथम त्यागी के ज्ञान को भुला दिया जाता, तो नये सिरे से यत्न करना पड़ता, फल क्या होता, वायुयान न बन पाता, अतः वेद का यह कहना **'ज्योतिष्मतः पथो रक्ष'** बहुत ही सारगर्भित है।

हाँ! यदि उस पहले उड़ने वाले ने जितना यत्न किया था, उतने की ही रक्षा की जाती, उसमें अपना भाग न डाला जाता, अपना दिमाग न लड़ाया जाता तो, तो भी वायुयान न बन पाता, अतः वेद ने ठीक ही कहा- **धिया कृतान्-** प्रकाश की रक्षा अवश्य कर किन्तु उसमें अपना भाग भी डाल, अन्यथा दीपक बुझ जाएगा।

वैदिकों ने इस तत्व को समझकर प्रथम संस्कृति= वेद तथा उसके अङ्गोपाङ्गों की रक्षा करने में प्राणपण से यत्न किया है, अतः वेद के शब्दों में कहो-

नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः। - ऋग्वेद १०/१४/२५

पूर्वज ऋषियों को नमस्कार।

ज्ञान का पर्यवसान अनुष्ठान में होता है। ज्ञान का अनुसरण करने के लिए ज्ञान के रक्षण और परिवर्द्धन की नितान्त

आवश्यकता है, किन्तु ज्ञान का प्रयोजन? 'ज्ञान, ज्ञान के लिए' यह सिद्धान्त प्रमादियों का है। ज्ञान की सफलता कर्म में है, अतः वेद कहता है–

'अनुल्बणं वयत जोगुवामपः।'

ज्ञानानुसार कर्म करने वालों के उलझनरहित कर्मों को करो। लोकोक्ति है– **'लोकोऽयं कर्मबन्धनः'**– कर्म बन्धन का कारण है। वेद कहता है कर्म तो अनिवार्य हैं, उनसे छूट नहीं सकते, अतः ऐसे कर्म करो जो उलझन को मिटाने वाले हों नाकि उलझन के बढ़ानेवाले। जो कर्म ज्ञानविरहित होंगे, ज्ञान के विपरीत होंगे, वे अवश्य उलझन पैदा करेंगे, अतः ऐसा न कर जिससे संसार की उलझनें और बढ़ें। यह तो पहले ही बहुत उलझा हुआ है।

तुझे सूझता नहीं कि कौन-सा कर्म **'अनुल्बण'** है और कौन सा **'उल्बण'**। तुझे कोई अंगुलि पकड़कर बताए। अच्छा, जहाँ तू रहता है, वहाँ कोई ब्रह्मनिष्ठ भी हैं या नहीं? उन ब्रह्मनिष्ठों का व्यवहार देखना, जो सत्यप्रिय, मधुरभाषी, निष्काम, सर्वहितकारी हों, देख, वे कैसे करते हैं। उनका अनुकरण कर, किन्तु ज्ञान को हाथ से न जाने देना। इन साधनों का अनुष्ठान करके निस्सन्देह मनुष्यता सुलभ हो जाती है, किन्तु मनुष्यत्व के साथ वेद ने एक कर्तव्य भी लगा दिया है। वह है–

जनया दैव्यं जनम्- दैव्य जन पैदा कर।

मनुष्य को मनुष्यता की सारी सामग्री समाज से मिली है, अतः उसे चाहिए कि वह भी समाज को कुछ दे जाए, समाज का सारा कार्यभार देवों के सहारे चलता है। प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है कि ऐसे सर्वहितकारी देवों का कुछ प्रत्युपकार अवश्य करे। इस भाव को लेकर वेद ने कहा–

जनया दैव्यं जनम्।

दैव्यं– देवहितकारी जन को कौन पैदा करेगा? क्या राक्षस, दस्यु? कभी नहीं, अतः देवजनहितकारी सन्तान उत्पन्न करने के लिए मनुष्य को स्वयं देव बनना पड़ेगा, अर्थात् मनुष्य बनकर जब सन्तान उत्पन्न करने में प्रवृत्त होने लगे, तब उसके हृदय में कुकाम की कुवासना न हो, वरन् जनसमाज, नहीं-नहीं देवसमाज के हित की भावना हो।

वेद मनुष्य बनाकर चुपके से देवत्व के मार्ग पर ला खड़ा करता है।

संकलन कर्त्ता एवं भाष्यकार- स्वामी वेदानन्द तीर्थ
साभार- स्वाध्याय-सन्दीप

विश्व भर से आने वाले पर्यटकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

Awesome place ,just give it a try you won't be disappointed ,that's my guaranty to you guys ,everything is there , humble and respected people ,and you will get knowledge at free of cost .I definitely recommend you please visit this as you have 1hr time.

- Vandana Agarwal fom Google

? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

Really great program .I always have some myths in my mind about our Indian history .For first time I left with no doubts .Really love it .Must go &check it out .

- 9 5 8 7 9 0 3 0 3

? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

It is enlighting to be visiting this treasure of information our history is well captured here and this information must reach all the person of younger age today as there is not much information .
Keep up the great work being done this is a cleanly maintained space and the staff is very cordial and are interested in spreading the message of mahrshi Dayanand Saraswati Ji .
Very informative indeed

- Amrit ke Desai

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

संस्कार वीथिकास्थ (कर्णवेध संस्कार)

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन–चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है। वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रूप से अनुगृहीत हूँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक– अशोक आर्य, अध्यक्ष–न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर

बैंक एकाउन्ट का विवरण :

AC. No. : 310102010041518,
IFSC CODE- UBIN 0531014,
MICR CODE- 313026001

में जमा करा कृपया सूचित करें।

जिन महानुभावों ने हमारे एक आग्रह पर न्यास को सम्बल प्रदान करने हेतु 5100 रु. (इक्कावन सौ) प्रतिवर्ष देकर सत्यार्थ मित्र बनना स्वीकार किया उनके चित्र को यहाँ हृदय से धन्यवाद प्रेषित करते हुए दे रहे हैं। बाकी साथियों के चित्र अगले अंक में दिए जायेंगे।

डॉ. वी. बी. सिंह
उदयपुर

श्री दिनेश अग्रवाल
उदयपुर

श्रीमती उमारानी मित्तल
उदयपुर

डॉ. वाई. के. गुप्ता
उदयपुर

श्री राजेश्वर आर्य
हैदराबाद

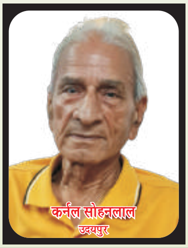
कर्नल सोहनलाल
उदयपुर

आर्य समाज पिछोली
उदयपुर

श्री विश्वबन्धु सचदेवा
मोदीनगर

कैसे हो पापा आप ?

२७ अगस्त को भारत के सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के पद पर माननीय जस्टिस यू.यू. ललित ने पद और गोपनीयता की शपथ ली। शपथ भारत की राष्ट्रपति महामहिम द्रौपदी जी मुर्मू ने दिलायी। शपथ के पश्चात् एक ऐसा स्वप्निल दृश्य लोगों ने देखा, जो आज प्रायः अत्यन्त विरल होकर स्वप्नवत् ही रह गया है। शपथ लेने ले बाद मुख्य न्यायाधीश जब आगे बढ़े तो लोग सोचने लगे कि क्या सी.जे.आई. प्रधान मंत्री का विशेषरूप से अभिवादन कर नयी अवांछनीय परिपाटी डालेंगे? पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। माननीय मुख्य न्यायाधीश ने अग्रिम पंक्ति के कोने में बैठे अपने पिता के चरण स्पर्श कर भारतीय संस्कृति को वहाँ उपस्थित तथा टेलीविजन के माध्यम से करोड़ों दर्शकों के समक्ष उपस्थित कर दिया। आज ऐसे दृश्य प्रायः देखने में नहीं आते। इसमें भी मैकाले की शिक्षा पद्धति से निकले और उच्च स्थिति पर अवस्थित पुत्रों में तो प्रायः इसका अभाव ही दिखायी देता है। जस्टिस ललित के इस सुकृत्य ने भारतीय संस्कृति के उपासकों को गर्व की अनुभूति करने का एक अवसर उपलब्ध करा दिया। आजीवन माता-पितादि गुरुजनों का ऋण चुकाने का प्रयत्न निरन्तर करते रहना भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है, प्रतिदिन चरण-स्पर्श उसका ही लघु भाग है।

मनुस्मृति का एक श्लोक अत्यन्त प्रसिद्ध है

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम्॥

अर्थात्- जो व्यक्ति सुशील और विनम्र होते हैं, बड़ों का अभिवादन व सम्मान करने वाले होते हैं तथा अपने बुजुर्गों की सेवा करने वाले होते हैं। उनकी आयु, विद्या, कीर्ति और बल इन चारों में वृद्धि होती है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज ने भी इस श्लोक को संस्कार विधि के वेदारम्भ संस्कार तथा सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में उद्धृत किया है। परिवारों में सभी सदस्यों में यह सहकारिता और समादर का भाव पारिवारिक उत्कृष्टता की धुरी होता है। 'हाय और हैलो' के युग में बुजुर्गों के चरण स्पर्श को महत्त्व देना तो दूर, कभी-कभी तो यह कह दिया जाता है कि चरण स्पर्श करना गुलामी सिखाता है यह आज की विडम्बना है। अंगुली पकड़ कर हमें चलना सिखाने वाले, स्वयं अनपढ़ रहकर भी हमें उच्च शिक्षा दिलाकर उच्च पद पर पहुँचाने में अपना सम्पूर्ण जीवन खपा देने वाले की जब वो अवस्था आती है कि आज उसे आवश्यकता है कि पुत्र उसकी अंगुली थाम ले, उसके योग क्षेम का ध्यान रखे, तब ऐसा करना तो दूर वह वाणी से सत्कार और सांत्वना के दो शब्द बोलना भी एवरेस्ट की चोटी पर चढ़ने के समान समझता है। ऐसे में श्री यू.यू. ललित एक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं, जो भारतीय संस्कृति के उच्चादर्शों की अभिव्यक्ति करता है।

महर्षि दयानन्द परिवार के बुजुर्गों की सेवा को अनिवार्य महत्त्व देते हुए इसे नैत्यिक कर्म स्थापित करते हुए पंचमहायज्ञों की श्रेणी में रखते हैं।

वस्तुतः जहाँ महर्षि दयानन्द माता-पिता के कर्त्तव्यों का निरूपण करते हुए सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में लिखते हैं-

'यही माता, पिता का कर्त्तव्य कर्म परमधर्म और कीर्ति का काम है जो अपने सन्तानों को तन, मन, धन से विद्या, धर्म, सभ्यता और उत्तम शिक्षायुक्त करना' वहीं इसी समुल्लास में बच्चों को भी यह संस्कार प्रदान करने के लिए निर्देश देते हैं जिससे यह उनके स्वभाव में आ जाय, उनकी आदत बन जाय। वे लिखते हैं -

'अपने माता, पिता और आचार्य की तन, मन और धनादि उत्तम-उत्तम पदार्थों से प्रीतिपूर्वक सेवा करें।'

यहाँ प्रीतिपूर्वक शब्द पर ध्यान दें। अनेक बार आपने देखा होगा कि जहाँ पुत्रादि लोक लाज के वशीभूत माता-पिता की सेवादि करते हैं, उनमें प्रीति का प्रायः अभाव ही रहता है। जबकि इस अवस्था में माता-पिता को और अधिक कुछ नहीं दो मीठे बोल ही अमृत के समान लगते हैं।

इस भौतिकवादी युग में साहचर्य की वास्तविकता को लक्ष्य कर एक विद्वान् ने लिखा है

यावद्वित्तोपार्जनसक्तः तावन्निजपरिवारो रक्तः।
पश्चाज्जीवति जर्जरदेहे वार्तां कोऽपि न पृच्छति गेहे।।

'अर्थात् जब तक व्यक्ति धनोपार्जन में समर्थ है, तब तक परिवार में सभी उसके प्रति स्नेह प्रदर्शित करते हैं परन्तु अशक्त हो जाने पर उसे सामान्य बातचीत में भी नहीं पूछा जाता है।'

वर्त्तमान में अधिकांशतः यही देखने में आता है। परन्तु यदि परिवार में वेदानुकूल समरसता स्थापित करनी है तो उक्त व्यवस्था अथवा मनोवृत्ति को ध्वस्त करना होगा। वेद में कहा है-

'अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शन्तिवाम्।। - अथर्ववेद काण्ड ३/सूक्त ३०/ मन्त्र २

भावार्थ- सन्तान माता-पिता के आज्ञाकारी, और माता-पिता सन्तानों के हितकारी, पत्नी और पति आपस में मधुरभाषी तथा सुखदायी हों। यही वैदिक कर्म आनन्दमूल है।

जो पुत्र पिता का अनुवर्ती होगा अथवा जिस परिवार में उक्त समरसता होगी क्या उसके बुजुर्गों को वृद्धावस्था में **'ओल्ड एज होम'** में जाना पड़ेगा? कदापि नहीं। ऐसा विचार भी ऐसे परिवार में उत्पन्न नहीं हो सकता। अतः वेदाज्ञा का पालन करना समाज को सुदृढ़ करेगा। महर्षि दयान्द ने पितरों के सम्मान को नित्यप्रति सेवन करने वाला यज्ञ ही नहीं महायज्ञ कहा है। वे लिखते हैं- पितृयज्ञ- अर्थात् जिस में जो देव- विद्वान्, ऋषि जो पढ़ने-पढ़ाने हारे, पितर- माता, पिता आदि वृद्ध ज्ञानी और परमयोगियों की सेवा करनी। पितृयज्ञ के दो भेद हैं एक श्राद्ध और दूसरा तर्पण। श्राद्ध अर्थात् 'श्रत्' सत्य का नाम है **'श्रत्सत्यं दधाति यया क्रियया सा श्रद्धा श्रद्धया यत्क्रियते तच्छ्राद्धम्'** जिस क्रिया से सत्य का ग्रहण किया जाय उस को श्रद्धा और जो श्रद्धा से कर्म किया जाय उसका नाम श्राद्ध है। और **'तृप्यन्ति तर्पयन्ति येन पितन् तत्तर्पणम्'** जिस-जिस कर्म से तृप्त अर्थात् विद्यमान माता-पितादि पितर प्रसन्न हों और प्रसन्न किये जायें उस का नाम तर्पण है। परन्तु यह जीवितों के लिये है मृतकों के लिये नहीं।

यहाँ ऋषि ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि 'जो बहुत से लोग कहते हैं कि माता-पितादि के मरणोपरान्त श्राद्ध व तर्पण किया जाता है वह सही नहीं। जीवित माता-पितादि की सेवा आदि ही श्राद्ध है, जब वह श्रद्धा से किया जाय और यही तर्पण है क्योंकि ऐसा करने से ही पितर तृप्त होते हैं। मृत्यु के पश्चात् यहाँ किसी को कराया भोजन या किसी को दिया द्रव्य पितरों को कुछ नहीं पहुँचता।'

सुधी पाठकों को यह भ्रम दूर कर लेना चाहिए कि पितरों के मरने के पश्चात् तथाकथित पंडित जो व्यर्थ की क्रियाएँ इस हेतु से कराते हैं कि इससे पितरों की तृप्ति होती है सो व्यर्थ ही है। जो कुछ सद्व्यवहार है वह जीवित माता-पिता के लिए है।

महर्षि दयानन्द अपने अन्य ग्रन्थ ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में भी ऐसा ही अभिप्राय प्रकट करते हैं-

'अब तीसरा पितृयज्ञ कहते हैं। उस के दो भेद हैं- एक तर्पण और दूसरा श्राद्ध। उनमें से जिस कर्म करके विद्वानूरूप देव, ऋषि और पितरों को सुखयुक्त करते हैं, सो 'तर्पण' कहाता है। तथा जो उन लोगों की श्रद्धापूर्वक सेवा करना है, उसी को 'श्राद्ध' जानना चाहिए। यह तर्पण आदि कर्म विद्यमान अर्थात् जीते हुए जो प्रत्यक्ष हैं, उन्हीं में घटता है मरे हुओं में नहीं। क्योंकि मृतकों का प्रत्यक्ष होना असम्भव है। इसलिये उनकी सेवा नहीं हो सकती। तथा जो उनके लिये कोई पदार्थ दिया चाहे वह भी उनको नहीं मिल सकता। इससे केवल विद्यमानों की ही श्रद्धापूर्वक सेवा करने का नाम 'तर्पण' और 'श्राद्ध' वेदों में कहा है। क्योंकि सेवा करने योग्य और सेवा करनेवाले इन दोनों ही के प्रत्यक्ष होने से यह सब काम हो सकता है, दूसरे प्रकार से नहीं।

इसी तर्क को चार्वाक ने विस्तरित करते हुए अभिप्राय व्यक्त किया है कि मृत पितरों को इस लोक में किया कोई कार्य प्रभावित नहीं करता। 'जो मरे हुए जीवों को श्राद्ध और तर्पण तृप्तिकारक होता है तो परदेश में जाने वाले मार्ग में निर्वाहार्थ अन्न, वस्त्र और धनादि को क्यों ले जाते हैं? क्योंकि जैसे मृतक् के नाम से अर्पण किया हुआ पदार्थ स्वर्ग में पहुँचता है तो परदेश में जाने वालों के लिये उनके सम्बन्धी भी घर में उनके नाम से अर्पण करके देशान्तर में पहुँचा देवें। जो यह नहीं पहुँचता तो स्वर्ग में वह क्योंकर पहुँच सकता है? 'जो मर्त्यलोक में दान करने से स्वर्गवासी तृप्त होते हैं तो नीचे देने से घर के ऊपर स्थित पुरुष तृप्त क्यों नहीं होता? (सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास १२ से)

वेद पितरों की सेवा के बारे में स्पष्ट आदेश देता है-

ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्।
स्वधा स्थ तर्पयत मे पितॄन्॥ - यजुर्वेद २/३४

पिता वा स्वामी अपने पुत्र, पौत्र, स्त्री और नौकरों को इस प्रकार आज्ञा देवें कि- जो-जो हमारे मान्य पिता, पितामहादि, माता, मातामहादि और आचार्य तथा इन से भिन्न भी विद्वान् लोग, जो अवस्था वा ज्ञान में बड़े और मान्य करने योग्य हैं, तुम लोग उन की उत्तम-उत्तम जल, रोग नाश करनेवाले उत्तम अन्न, सब प्रकार के उत्तम फलों के रस आदि पदार्थों से नित्य सेवा किया करो, कि जिससे वे प्रसन्न होके तुम लोगों को सदा विद्या देते रहें। क्योंकि ऐसा करने से तुम लोग भी सदा प्रसन्न रहोगे। और ऐसा विनय सदा रक्खो कि हे पूर्वोक्त पितर लोगो! आप हमारे अमृतरूप पदार्थों के भोगों से तृप्त हूजिये और हम लोग जो-जो पदार्थ आप लोगों की इच्छा के अनुकूल निवेदन कर सकें, उन-उन की आज्ञा किया कीजिये। हम लोग मन, वचन और कर्म से आप के सुख करने में स्थित हैं, आप किसी प्रकार का दुःख न पाइये। क्योंकि जैसे आप लोगों ने बाल्यावस्था और ब्रह्मचर्य्याश्रम में हम लोगों को सुख दिया है, वैसे ही हमको भी आप लोगों का प्रत्युपकार करना अवश्य चाहिए, कि जिससे हम लोगों को कृतघ्नता दोष न प्राप्त हो।

इस प्रकार हम प्राचीन भारतीय वाङ्मय तथा इतिहास में सर्वत्र पितृयज्ञ की महिमा के दर्शन करते हैं, और उसी भावना का आज सर्वोच्च न्यायाधीश के द्वारा शानदार प्रदर्शन से हुयी प्रसन्नता के फलस्वरूप यह प्रेरणा-आलेख है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान की दिनचर्या का वर्णन करते हुए गोस्वामी तुलसीदास लिखते हैं-

'प्रातःकाल उठी के रघुनाथा, मातु पिता गुरु नावहि माथा'

महाभारत को देखिये द्रौपदी स्वयंवर के पश्चात् जब पांडवों का पीछा करते भगवान कृष्ण कुन्ती की कुटी तक पहुँचते हैं तो अपना परिचय देकर बुआ के चरण स्पर्श करते हैं। यही भारतीय परम्परा और आदर्श है।

अधिक क्या लिखें। माता-पितादि पितरों के चरण स्पर्श करना तो पितृयज्ञ का प्रथम सोपान ही है और भारत के प्रधान न्यायाधीश ने अपने शपथ ग्रहण समारोह में इसी के दर्शन कराते हुए एक सद्उदाहरण प्रस्तुत किया है। महापुरुषों के व्यवहार से शिक्षा लेने वाले, भारतीय संस्कृति के इस गौरव को अपने जीवन में स्थान देने को उद्यत होंगे ऐसी आशा करते हैं।

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

भारतीय इतिहास में श्रीकृष्ण के सदृश कोई दूसरा व्यक्ति इतना महान् नहीं हुआ, जिसे योगेश्वर पुकारा जाता हो। श्रीकृष्ण के जन्म के समय भारत खण्ड-खण्ड में विभक्त था। 'गृहे गृहे ही राजानं स्वस्य स्वस्य प्रियंकरा' अर्थात् घर-घर राजा हैं और अपने ही हित में लगे हुए हैं।

सम्पूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने वाला कोई व्यक्ति नहीं था। कंस, जरासन्ध, शिशुपाल, दुर्योधन आदि जैसे दुराचारी व विलासियों का वर्चस्व निरन्तर बढ़ रहा था। राज्य के दैवीय सिद्धान्त और प्रतिज्ञा से भीष्म जैसे योद्धा तक बंधे हुए थे।

श्रीकृष्ण के जन्म से पहले ही उनके माता-पिता मथुरा के राजा कंस के कारावास में कैदी थे। कंस ने उनके सात भाइयों की हत्या भी करवा दी थी। ऐसे घोर अन्धकार और अन्यायपूर्ण वातावरण में श्रीकृष्ण का जन्म हुआ। परन्तु उन्होंने अपने अद्भुत चातुर्यपूर्ण नीति एवं कौशल से इन राजाओं का समूल विनाश करवाकर युधिष्ठिर को भारत का चक्रवर्ती सम्राट बनवा ही दिया।

श्रीकृष्ण का चरित्र चित्रण-

1. जन्म व छात्रावस्था- श्रीकृष्ण का जन्म लगभग ५२०० वर्ष पूर्व हुआ था। वे वेद-वेदांग, धनुर्वेद, गन्धर्व-वेद, स्मृति, मीमांसा, न्यायशास्त्र के पारंगत विद्वान् थे व सन्धि, विग्रह, यान, आसन, द्वैत व आश्रय इन छः भेदों से युक्त राजनीति और अर्थशास्त्र उनके अध्ययन के प्रमुख विषय थे।

2. लोकनायकत्व- अरिष्ट नामक पागल बैल व कैशी नामक दुर्दम्य घोड़े को मारकर वे बचपन से ही गोकुल वासियों के नायक बन गए थे।

3. संघ राज्य के समर्थक- कंस का वध करके उन्होंने पुनः राजतंत्र की परम्परा को परित्याग करके प्रजातन्त्र यानी संघ राज्य की स्थापना की।

4. अर्घ्यदान के पात्र यानी सर्वाधिक प्रतिष्ठित युगपुरुष- राजसूय यज्ञ की समाप्ति पर पितामह भीष्म ने सम्राट् युधिष्ठिर से इनको यह कहकर अर्घ्य दिलवाया कि, समस्त पृथिवी पर मानव जाति में अर्घ्य प्राप्त करने के सबसे उत्तम अधिकारी श्रीकृष्ण ही हैं। क्योंकि वेद-वेदांग का ज्ञान, बल-विद्या और नीति का ज्ञान सम्पूर्ण पृथिवी पर इनके समान किसी और मनुष्य में नहीं है।

5. संयम एवं ब्रह्मचर्य की साधना- विवाह के उपरान्त सामवेद के विधान के अनुसार अपनी पत्नी के साथ १२ वर्ष तक ब्रह्मचर्य की साधना की। ऐसे महात्मा के लिए ८-८ पटरानियाँ व १६००० रानियाँ और १८००० पुत्रों के पिता होने के अनर्गल प्रलाप आधुनिक विद्वानों ने किये। उनके एक पुत्र और एक पत्नी को छोड़कर महाभारत या श्रीमद्भागवत में राधा नाम का कोई दूसरा पात्र नहीं है। ब्रह्मवैवर्तादि पुराणकारों ने उनके उज्ज्वल चरित्र को कलंकित करने की कुत्सित चेष्टा की है।

6. ज्ञान के क्षेत्र में श्रीकृष्ण- ज्ञान के क्षेत्र में श्रीकृष्ण अप्रतिम थे। गीता का ज्ञान संसार का सर्वोच्च उदाहरण है।

वे शास्त्रों में पारंगत, शस्त्रों में निपुण व राजनीति के बृहस्पति थे।

7. महान् योगी- श्रीकृष्ण महान् योगी थे। महाभारत में श्रीकृष्ण ने तीन बार दृष्टि अनुबन्ध का प्रयोग किया। दुर्योधन के समक्ष राजदरबार में, युद्ध के समय अर्जुन को और तीसरी बार कौरवों को सूर्यास्त का भान कराया।

8. कूटनीतिज्ञ- शुक्राचार्य ने अपने नीतिसार में लिखा है कि- 'कृष्ण के समान कूटनीतिज्ञ कोई इस पृथिवी पर दूसरा नही हुआ।'

9. मनोविज्ञानी- कर्ण से हारने के बाद युधिष्ठिर का मनोबल गिर गया था। पुनः शल्य के साथ युद्ध करने की अनुमति देकर उसका मनोबल बढ़ाया।

10. पाखण्ड का विरोध- धर्म के नाम पर ढोंग फैलाने वालों को श्रीकृष्ण मिथ्याचारी तथा विमूढ़ कहकर भर्त्सना करते हैं।

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्।
इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते।। - गीता ३/६
कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम्। - गीता ३/१५

अर्थात्- 'कर्म को तू वेद से उत्पन्न जान। और वेद परमात्मा से उत्पन्न हुआ है।' अतः श्रीकृष्ण वेद को ही सर्वोपरि मानते हैं।

श्रीकृष्ण भगवान क्यों ?

सम्पूर्ण ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान, और वैराग्य इन छः का नाम 'भग' है। जिसके पास इनमें से एक भी हो वह भगवान कहलाता है।' इसीलिए श्रीकृष्ण जैसे महापुरुषों को भगवान कहा जाता है।

(ईश्वर के पास ये सभी गुण है इसीलिए ईश्वर भी भगवान है। किन्तु भगवान ईश्वर नहीं है।)

श्रीकृष्ण स्वयं कहते है कि मैं ईश्वर नही हूँ। महाभारत में वे कहते हैं कि- मैं यथासाध्य मनुष्योचित् प्रयत्न कर सकता हूँ, किन्तु देव (ईश्वर) के कार्यों में मेरा कोई वश नहीं।'

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि 'श्रीकृष्ण महान् योगी, महान् राजनीतिज्ञ, महान् कूटनीतिज्ञ, महान् योद्धा, महान् विद्वान् तथा एक आप्त पुरुष थे।'

आओ हम सब उनके जीवन से प्रेरणा लें। 'हम बुद्धि व बल प्राप्त कर अपने राष्ट्र व मनुष्य जाति का कल्याण करें'। हम मूढ़ बनकर उनका अपमान ना करें, अपितु उनके जीवन चरित्र का अधिक से अधिक प्रचार व प्रसार करें।

प्रस्तुति- आचार्य धर्मबन्धु

जग को प्राण दे गए

मथकर अमृत निकाला तुमने, विष पी जग को प्राण दे गए।
पत्थर फोड़ निकाली गंगा, पाखण्डों की नाव खे गए।।
आए, लाए साथ सत्य तुम,
स्वप्न छोड़ सारा जग जागा।
गूँज उठा आर्यत्व देश में,
भय का भूत आग से भागा।
तुम बोले, जग ने स्वर पाया,
भारत माँ का भाल उठ गया।
जिसमें स्वयं जा फँसे थे हम,
वह अनीति का जाल उठ गया।।
भँवर किनारा बनी चरण छू, तैराकर संसार ले गए।
मथकर अमृत निकाला तुमने, विष पी जग को प्राण दे गए।।
प्राणों के स्वर सुनो, देव वह–
आज नई झनकार माँगता।
खँडहर खोदो, रचो नया कुछ,
समय नया संसार माँगता।।
यह परिवर्तनशील विश्व है,
कल की दुनिया आज कहाँ है ?
उस ऋषि का ही बीज फला, जो
जनता का साम्राज्य यहाँ है।।
प्राण धर्म में उस योगी के, प्राण न अपने साथ ले गए।
मथकर अमृत निकाला तुमने, विष पी जग को प्राण दे गए।।
भूली–भटकी इस दुनिया को,
तुम 'सत्यार्थप्रकाश' दे गए।
थककर रूके हुए पैरों को–
गति का नया विकास दे गए।।
नई ज्योति से जाति जगाई,
जग को जीवन दान कर गए।
जो चाहे वह पिये प्रेम से,
वेदों का रस–कलश भर गए।।
ईर्ष्या हुई देवताओं को, जग–मन्दिर का दीप ले गए।
मथकर अमृत निकाला तुमने, विष पी जग को प्राण दे गए।।

लेखक- श्री रघुवीर शरण मित्र
साभार- वन्दना के स्वर

चिन्ता छोड़ो सुख से जियो

आदमी के पैदा होने से पहले से लेकर मरने तक उसे चिन्ता ने घेर रखा होता है। चिन्ता इस बात की होती है कि जो हम चाहते हैं वह होगा या नहीं, चिन्ता इस बात की होती है कि कहीं कोई हमारा नुकसान तो नहीं कर देगा! आदमी को सांस-सांस में चिन्ता है, सोते जागते बस इस बात की चिन्ता, उस बात की चिन्ता! विवाह के बाद पति-पत्नी चाहते हैं कि पहली सन्तान लड़का ही हो, कई बार,,, शर्तिया लड़का होगा,, ऐसा कहने वालों से कोई दवाई भी लेते हैं और जब डिलीवरी होती है तो आदमी के लाख प्रयत्नों तथा सोच के बाद भी लड़की ही पैदा होती है। तभी से चिन्ता की नींव खुद जाती है। लड़की को पढ़ाना, लिखाना, दुनियादारी में अच्छी बुरी नजर से बचाना, अगर लड़की पढ़ने गई है या काम पर गई है, जब तक सुरक्षित वापस ना आ जाए माँ-बाप की सांसें अटकी रहती हैं, इतना ही नहीं उसके विवाह के लिए अच्छा वर ढूँढना, दहेज तथा दूसरे खर्चों का प्रबन्ध करना, माँ-बाप के लिए चिन्ता का

कारण बना रहता है। सब कुछ ठीक हो जाने के बाद भी माँ-बाप को यह चिन्ता लगी रहती है कि उनकी बेटी ससुराल में सुख शान्ति से और दिल लगाकर रह रही होगी या नहीं, उसे उचित मान सम्मान भी मिल रहा होगा या नहीं। माँ-बाप को चिन्ता केवल अपनी लड़की के बारे में ही नहीं होती बल्कि लड़के के बारे में भी होती है। उसके पालन-पोषण, पढ़ाई-लिखाई, नौकरी, विवाह शादी तथा मनवांछित सन्तान की भी होती है। आदमी को कदम-कदम पर चिन्ता का सामना करना पड़ता है। चिन्ता आदमी को चैन से सोने, खाने, पीने, सोचने तथा दिल लगाकर कोई काम करने नहीं देती। चिन्ता चिता समान है। यह आदमी को शारीरिक तथा मानसिक तौर पर खोखला कर देती है।

असल जीवन में जीना एक कला है। चिन्तायें तो पैदा होती रहेंगी, नियंत्रित करने, उनका समाधान ढूँढने तथा सुख से जीने का हुनर सबको नहीं आता। चिन्ता करने से क्या होगा? कल की चिन्ता को लेकर हम अपना सुनहरी आज भी बर्बाद कर देते हैं। अगर कोई चिन्ता, फिक्र या टेंशन है तो उसका विश्लेषण कीजिए, उससे निपटने के लिए योजना बनाइए, अगर किसी की मदद भी लेनी पड़े तो इसमें क्या हर्ज है? हमारी चिन्ता का समाधान अंततः हमने खुद ही ढूँढना है, कोई दूसरा हमारी चिन्ता के बोझ को क्यों और कब तक उठाएगा?

अगर आप विद्यार्थी हैं तो अपने पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर तैयारी कीजिए, मार्गदर्शन प्राप्त कीजिए, अपने शिक्षकों, माता-पिता आदि से सहायता प्राप्त कीजिए, वो लोग आपसे ज्यादा अनुभवी हैं आपकी चिन्ता को समझ कर आपकी मदद कर सकते हैं, प्रोत्साहन दे सकते हैं, निराश नहीं होने देंगे। अगर सुख से जीना है तो आज ही, बल्कि मैं तो कहूँगा अभी से ही परिस्थिति को ध्यान में रखकर जीवन व्यतीत करना सीखिए।

जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है
मुर्दा दिल क्या खाक जिया करते हैं ?

कहावत मशहूर है। अगर चिन्ता के समाधान में लम्बा समय लगने की सम्भावना है तो मन की शान्ति के लिए धैर्य रखें, परमात्मा का चिन्तन करें, धार्मिक तथा शिक्षाप्रद पुस्तकें पढ़िए, अपने मित्रों या शुभचिन्तकों के साथ विचार-विमर्श कीजिए, योग का सहारा लीजिए, चिन्ता से छुटकारा पाने के लिए अपने मनपसन्द गीत, संगीत, भजन, कीर्तन, किसी खेल या फिर मनपसन्द हाबी में समय बिताना शुरू कीजिए, समाज सेवा का कोई काम करके जहाँ दूसरों का भला होगा

वहाँ चिन्ता से आपका ध्यान हटाने में भी मदद मिलेगी। मुसीबतें, कठिनाइयाँ, दिक्कतें, बाधाएँ, असफलताएँ, उम्मीद के विपरीत बातों का होना, किसी ना किसी समस्या का पैदा होना जिन्दगी का एक स्वाभाविक भाग है। आखिरकार हर आदमी का दिल बहुत कोमल होता है, छोटी-छोटी विपरीत परिस्थिति आने पर मन डांवांडोल हो ही जाता है, बड़े-बड़े हिम्मत वाले लोग भी हौसला हार जाते हैं फिर आप और हम जैसे लोग तो कहीं स्टैण्ड ही नहीं करते। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि हम हिम्मत हार कर बैठ जाएँ। लड़ाई लड़ने से पहले ही हार मान लें, चिन्ता दूर करने के उपायों के हथियार डालकर निराशा को गले लगा लें। हमारे में से कोई भी पत्थर दिल नहीं है जिस पर चिन्ता का कोई असर ना हो। जब कभी भी हमें किसी काम में सफलता मिलती है तो उसके पीछे हमारी सूझबूझ, हिम्मत, योजनाबन्दी, हमारे शुभचिन्तकों की सहायता तथा मार्गदर्शन, बुजुर्गों का अनुभव, हमारा धैर्य तथा हौसला होता है। चिन्ता से मन हटाने के लिए कभी-कभी मनोरंजन का साधन भी हमारे लिए उपयोगी साबित होता है, कभी बुजुर्गों द्वारा कही हुई या पुस्तकों में पढ़ी हुई सूक्तियाँ भी हमारे काम आ जाती हैं। आप गरीब मजदूर तथा देहाड़ीदार लोगों को ही देखिए,

गरीबी तथा अभाव के बावजूद भी होली, फाग तथा अन्य त्योहार वह लोग अमीरों के मुकाबले में ज्यादा जोश तथा दिल से मनाते हैं। ऐसा करते समय वे हर प्रकार की चिन्ता को भूल जाते हैं, क्या हम इन लोगों से कुछ सीख नहीं सकते? चिन्ता केवल परिवारजनों, गरीबों, नौकरीपेशा लोगों को ही नहीं बल्कि अमीर तथा कार्पोरेट जगत् के लोगों को भी होती है। उनके लिए अपने विशाल व्यवसायिक साम्राज्य को सम्भालने तथा उसका विस्तार करने की चिन्ता होती है और इसके साथ साथ अपने प्रतिद्वंद्वियों के मुकाबले में हर कदम पर आगे निकलकर ज्यादा सफल होने की फिक्र भी होती है। ऐसे लोग तनावमुक्त हों, ऐसी बात भी नहीं। कुछ चिन्ताएँ ऐसी होती है जिनके ऊपर इंसान का कोई कन्ट्रोल नहीं होता जैसे कि किसान ने फसल बोई है, वह पक कर तैयार हो गई है, काटने का समय नजदीक है, उसे यह चिन्ता सताती है कि कहीं बरसात ना आ जाए, ओले पड़ने ना शुरू हो जाएँ। ऐसी स्थिति में किसान का चिन्ता करने से कुछ होने वाला नहीं है, सब कुछ परमात्मा पर छोड़ देना चाहिए। हाँ, फसलों का बीमा करवाकर नुकसान से बचने की कोशिश करके चिन्ता को कम किया जा सकता है।

हर आदमी को कोरोना ग्रस्त होने की चिन्ता सताती रहती है। हमने देखा है कि इस महामारी की दूसरी लहर में लाखों लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी है, जो इस महामारी के शिकार होकर ठीक हो भी गए वो भी आज तक किसी न किसी शारीरिक विकार का शिकार होकर चिन्तित रहते हैं। बेशक हम इस महामारी से बचने के लिए बाहर निकलने पर मास्क का इस्तेमाल कर सकते हैं, सोशल डिस्टेंसिंग की पालना कर सकते हैं, बार-बार साबुन तथा सैनिटाइजर से हाथ-मुँह धोकर सफाई रख सकते हैं, वैक्सीन के दो डोज लगवा कर सुरक्षित रह सकते हैं, लेकिन इसके बावजूद भी हमें कोरोना की चिन्ता सताती रहती है।

इस तरह दुनिया में शायद ही कोई आदमी होगा जिसको किसी ना किसी बात की चिन्ता ना हो। किसी को, किसी बात की चिन्ता है तो किसी को किसी और बात की चिन्ता है। आदमी पैदा हुआ है तो चिन्ताएँ तो होंगी ही। लेकिन लगातार चिन्ता का कोई ना कोई बहाना ढूँढ लेना एक मानसिक बीमारी है जो हमारी तर्क-वितर्क शक्ति पर विपरीत प्रभाव डालती है। इसके समाधान के लिए हमें मनोवैज्ञानिक चिकित्सक की सलाह लेनी चाहिए। याद रखिए परमात्मा ने हमें मानव जीवन सुख से जीने, आनन्दित रहने, घर-परिवार

में अपने दायित्वों को पूरा करते हुए सुख-शान्ति से जीने के लिए दिया है, दूसरों का भला करने, ईमानदारी से अपना काम करके हँसी-खुशी से जीने, दूसरों का दुख दर्द बाँटने

तथा अपना लोक-परलोक सुधारने के लिए दिया है। ऐसी स्थिति में हमारे माथे पर चिन्ता की लकीरों का होना शोभा नहीं देता। जब आपको किसी बात की चिन्ता सताए तो अपने से ज्यादा चिन्तित व्यक्ति की मदद कीजिए, आपको इस बात से तसल्ली हो गई कि.... दुनिया में बहुत गम हैं, लेकिन मेरा गम औरों से बहुत कम है....। मदद मिलने पर ज्यादा चिन्तित आदमी आपका धन्यवाद तो करेगा इससे आप को शान्ति मिलेगी पर आपकी चिन्ता भी कम हो जाएगी। सुबह-सुबह आसमान में उड़ते हुए तरह-तरह के पक्षियों को देखिए, उगते हुए सूरज की लालिमा को देखिए, बाग में खिले हुए तरह-तरह के फूलों, उन पर मंडराते हुए भँवरों और तितलियों को देखिए, सुबह-सुबह मन्दिर से सुनाई देने वाले धार्मिक भजनों और बजते हुए घण्टों की आवाज को सुनिए, क्या यह सब सुनकर और देखकर आपको नहीं लगेगा कि आपका किसी बात के लिए चिन्ता करना निरर्थक है। इन्हें देख कर आपको लगेगा कि सभी बातों को छोड़कर हमें अपना जीवन सुख से जीना चाहिए, चिन्ता को छोड़ देना चाहिए। अतः चिन्ता छोड़िए, सुख से जीना सीखिए। चिन्ता मुक्त होने के लिए अपने आपको किसी ना किसी काम में व्यस्त रखिए, मुसीबत के समय में जरूरत पूरी करने के लिए पर्याप्त बचत कीजिए, अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखिए, दूसरों की मदद कीजिए, बाद में चिन्ता ग्रस्त होने पर यही लोग आपकी मदद करेंगे, जिन बातों के कारण आपको चिन्ता होती है उसका समाधान कीजिए, सकारात्मक सोच रखिए, समय परिवर्तनशील है। जो चिन्ता आपको अब है वह हमेशा रहने वाली नहीं। फिर फिक्र किस बात की? चिन्ता छोड़ो, सुख से जियो।

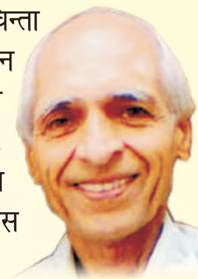

– प्रोफेसर शाम लाल कौशल
मकान नं. 975, बी/20, ग्रीन रोड़, रोहतक (हरि.)
चलभाष– 94 16 35 90 45

नवलखा महल उदयपुर को विजिट करना मेरी जिंदगी के सुखद एहसासों में से एक है इसमें स्वामी दयानंद जी के जीवन की रोचक व प्रेरक बातों की जानकारी से अति प्रसन्नता हुई है। पृथ्वीराज चौहान के जीवन की शार्ट फिल्म देखना मेरे ज्ञान में वृद्धि में सहायक बनी। धन्यवाद

– वागा राम बेगड़

पूरा नाम–
चलभाष–

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०८/२२

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (द्वादश समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१ चा	१	१	१ क	■	२	२ त्य	२	■	३
४	४ र	४	४ श्व	४	■	५	५ न्या	५	■
■	६	६ ज्ञा	६	■	७ प	७	७	७ क	■

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. भूतों के योग से जड़ शरीर ही नहीं चैतन्यता भी उत्पन्न होती है ऐसा कौनसा दर्शन मानता है?
२. चार्वाक किस प्रमाण को मानते हैं?
३. 'आत्मा अविनाशी है', क्या यह याज्ञवल्क्य का कथन है? हां या ना?
४. आदि सृष्टि में मनुष्यादि शरीरों की आकृति का कर्ता कौन था?
५. धान्य का ग्रहण और बुस का त्याग कौन करता है?
६. चारवाक के अनुसार जो स्वर्ग के सुख की इच्छा से अग्निहोत्रादि कर्म करते हैं वे क्या हैं?
७. जो है ही नहीं उसकी आशा करना मूर्खता का काम है, यहाँ चार्वाक किसके बारे में कह रहा है?

''विस्तृत नियम पृष्ठ २४ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।''

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ नवम्बर २०२२

डाकिया डाक लाया
मेरी सत्यार्थ सौरभ नहीं लाया

यह शीर्षक पढ़कर आपको आश्चर्य हो रहा होगा। परंतु हम लगभग ११ वर्ष बाद बड़ी जिम्मेदारी से इस बात को लिख रहे हैं। सत्यार्थ सौरभ को प्रकाशित करते हुए आज ११ वर्ष हो गए, मासिक पत्र है, प्रत्येक माह की ६ तारीख को पोस्ट आफिस में इसकी डिलीवरी देनी होती है। आज तक ११ वर्ष में एक भी अवसर ऐसा नहीं आया जब हमने ६ तारीख को पत्रिकाएं पोस्ट आफिस तक ना पहुंचाई हों। कंप्यूटर से टंकित सभी पते पूरे और सुस्पष्ट होते हैं फिर भी हर बार न जाने कितने पाठकों तक सत्यार्थ सौरभ नहीं पहुंच पाती है। कुछ ग्राहक समझते हैं कि हमने भेजी ही नहीं। वे एक दो अन्य पत्रिकाओं का उदाहरण देते हैं कि वे आ रही हैं तब यह क्यों नहीं आई। बात तो ठीक है। परंतु हम तो केवल इतना निवेदन कर सकते हैं कि जिस पत्रिका को सुंदर सार्थक बनाने में हम अपनी सारी ऊर्जा का लगभग ६० प्रतिशत खर्च कर देते हैं उसे आखिर हम ग्राहक तक क्यों नहीं पहुंचाएंगे?

कुछ ग्राहक ऐसे होते हैं जो सत्यार्थ सौरभ के प्रत्येक लेख को इतना पसंद करते हैं कि हर महीने व्यग्रता के साथ सत्यार्थ सौरभ की प्रतीक्षा करते हैं और जब उनको पत्रिका नहीं मिलती तो वह हमको या कार्यालय को फोन करते हैं। हम उन से निवेदन करते हैं कि आप अपना पता बताइए। पता जब ठीक होता है तो हम यह और निवेदन करते हैं कि कृपया अपने पोस्ट आफिस में जाकर के संपर्क करें और उनको यह कहें कि पत्रिका आती है उसे आप हमारे यहां पहुंचाएं। परंतु फिर भी कोई महीना ऐसा नहीं जाता जिसमें कि सदस्यों की ऐसी शिकायत ना आती हों। हमें बहुत दुख होता है और विवशता जब यह हो जाती है कि हम उस में कुछ नहीं कर सकते तो दुख की इंतहा होती है। ज्यादा से ज्यादा हम यह करते हैं कि उन ग्राहकों को जिनको सत्यार्थ सौरभ नहीं मिली होती हम दोबारा भेज देते हैं।

पोस्ट आफिस दोषी कैसे? इसे सिद्ध करने हेतु हम आपके सामने दो उदाहरण, जो अभी हमारी स्मृति में हैं, वे रखते हैं। संभवतः देहरादून के डॉक्टर साहब हैं, बड़े संपन्न हैं, उद्योगपति हैं, उन्हें हमने संभवतः आस्ट्रेलिया की यात्रा के समय सत्यार्थ सौरभ का सदस्य बनाया था और उनके पास पत्रिका नहीं पहुंची। एक महीना, दो महीना, ४ महीने तक इंतजार करने के पश्चात् आखिर उन्होंने हम तक संदेश भिजवाया, वह भी किसी अन्य के माध्यम से कि भाई पत्रिका प्राप्त नहीं हो रही। तब हमने अगला अंक अथवा तीन चार अंक रजिस्ट्री के द्वारा उनको भेजे, फिर भी उन तक पत्रिका नहीं पहुंची। जब उनकी शिकायत आई तो क्योंकि रजिस्ट्री नंबर हमारे पास था हमने सर्च किया और आश्चर्य की बात यह थी कि उसके अनुसार पत्रिकाएं डिलीवर कर दी गईं थीं। हमने इसको स्कैन करके माननीय डाक्टर साहब को भेज दिया। उन्होंने जब अपने पोस्टमैन को बुलाकर यह दिखाया तो वह पैरों में पड़ गया कि साहब शिकायत न करें मेरी नौकरी चली जाएगी। इससे सुदृढ़ कोई क्या सबूत होगा कि पोस्ट आफिस में जो लापरवाही होती है वह इस हद तक होती है कि रजिस्टर्ड डाक भी नहीं पहुंचाई जाती। एक और दूसरा उदाहरण देना चाहेंगे ग्वालियर की बहन सुनीता भदौरिया जी हैं जो न्यास से अत्यंत आत्मीयता रखती हैं। ग्वालियर में आचार्य वेद प्रकाश जी श्रोत्रिय जब अपने किसी कार्यक्रम पर गए थे तो उन्होंने १०-१५ सदस्य पत्रिका के बनाए थे इनकी प्राय शिकायतें मिलती रहती थीं कि पत्रिकाएं नहीं मिलती हैं। आचार्य जी को शिकायत करते थे। नतीजा यह हुआ कि आचार्य जी ने आगे सदस्य बनाने बंद कर दिए। स्वाभाविक बात है कि इस इल्जाम को कौन अपने ऊपर लेना चाहेगा कि आपने सदस्यता शुल्क तो ले लिया और पत्रिका तक नहीं आ रही। ऐसे ही अन्य कई विद्वानों ने जब सत्यार्थ सौरभ के सदस्य बनाने प्रारंभ किए तो उनके साथ भी ऐसा ही हुआ। धीरे-धीरे सब

ने हाथ खींच लिए।

तो बात मैं सुनीता जी की कर रहा था। उनकी पत्रिकाएं भी जब कुछ समय नहीं पहुंचीं हमने तीन चार अंक रजिस्ट्री उनके यहां कराए। आपको आश्चर्य होगा वह रजिस्ट्री लौट कर के हमारे पास आई और उसके ऊपर लिखा हुआ था लिखे हुए पते पर कोई नहीं रहता जबकि यह पता न जाने कब से सुनीता जी का ही पता था। हमने उसकी फोटो खींच कर के सुनीता जी को भेजी। तो यह स्थिति है पोस्ट ऑफिस की। हमने आज ११ वर्ष बाद यह क्यों लिखा? मन में एक पीड़ा है कि इतनी मेहनत करके पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है और केवल पोस्टमैन के आलस्य के कारण जो ग्राहक इसकी सामग्री को पढ़ने के लिए बेचैन रहते हैं उन तक नहीं पहुंच पाती। परंतु इसका कोई समाधान आज भी हमारे पास नहीं है। आर एन आई के कारण ५० पैसे की टिकट लगती है। यह संभव ही नहीं है कि जिस पत्रिका का वार्षिक शुल्क ₹१०० हो (अभी जो ₹१५० कर दिया गया है) उसे रजिस्ट्री से भेजा जाए। एक रजिस्ट्री पर लगभग ₹२२ या ₹२५ खर्च होते हैं, तो यह संभव ही नहीं है। एक कृपालु पाठक हैं वे कहते हैं हमको रजिस्ट्री भेज दीजिए हम रजिस्ट्री का खर्च दे देंगे। परंतु सामान्य तौर पर यह संभव नहीं है।

इसका क्या समाधान है हमारी समझ में नहीं आता। हम अपने सत्यार्थ सौरभ के सदस्यों से कहना चाहते हैं कि हम तो जिनके दो-दो तीन-तीन वर्ष तक सदस्यता का नवीनीकरण नहीं होता, उनको भी पत्रिका भेजते रहते हैं और कंप्यूटर में जब एक बार आप का पता सही से टाइप हो गया होता है और कम से कम १ अंक आप तक पहुंच गया होता है तो यह गारंटी है कि आपका पता भी सही है आप तक प्रेषित भी की जा रही है तो फिर केवल पोस्ट आफिस ही बचता है जिसकी लापरवाही की वजह से हमारे लिए गंभीर अपराध खड़ा हो जाता है कि सदस्य को सत्यार्थ सौरभ नहीं पहुंची। यह लिखने के पश्चात् हम सभी उन सदस्यों से क्षमाप्रार्थी हैं जिन तक समय-समय पर सत्यार्थ सौरभ नहीं पहुंच पाती। हमारे पास तो इसका केवल समाधान यही है कि यदि २० तारीख तक सत्यार्थ सौरभ ना पहुंचे तो न्यास को सूचित कर दें ताकि उन्हें एक बार पुनः वह पत्रिका भेजी जा सके।

क्षमा याचना के साथ
अशोक आर्य
अध्यक्ष, श्रीमद दयानंद सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर

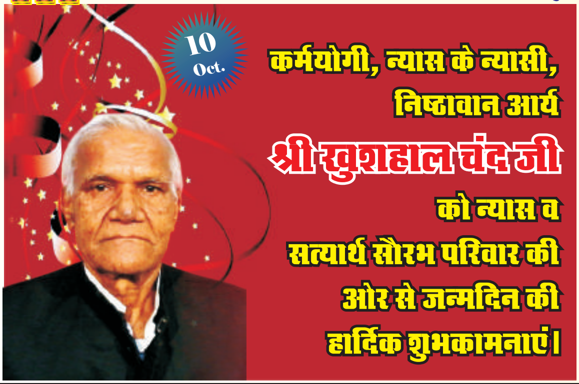

स्वास्थ्य

गेहूँ 500 ग्राम
चावल 500 ग्राम
बाजरा 500 ग्राम
साबुत मूँग 500 ग्राम

सभी को उपरोक्त मात्रा में लेकर भूनकर दलिया बना लें। इसमें अजवायन २० ग्राम तथा सफेद तिल ५० ग्राम भी मिला लें। सभी को उपरोक्त मात्रा में लेकर आवश्यकता के अनुसार लगभग ५० ग्राम दलिए को ४०० मिलीलीटर पानी में डालकर पकाएँ। स्वाद के अनुसार सब्जियाँ एवं फल तथा नमक मिलालें। नियमित रूप से १५ से ३० दिन तक दलिया का सेवन करने से मधुमेह में लाभ होता है। मोटापे से पीड़ित रोगी इस दलिया का नियमित सेवन कर निर्बाध रूप से अपना वजन कम कर सकते हैं। खीरा, करेला, टमाटर का रस मधुमेह के लिए सर्वश्रेष्ठ है। मोटापा, कब्ज कोलेस्ट्रॉल, चर्म रोग एवं कैंसर जैसे रोगों में गोमूत्र अर्क सर्वश्रेष्ठ औषध है।

मोटापा मधुमेह व हृदय रोग में अत्यन्त लाभप्रद अश्वगंधा पत्र प्रतिदिन सुबह-दोपहर एवं सायंकाल ११ अश्वगंधा पत्ते को हाथ में मसल कर गोली बनाकर भोजन से एक घण्टा पहले या खाली पेट जल के साथ लें। एक सप्ताह के नियमित सेवन के साथ ही फल, सब्जियाँ, दूध, छाछ एवं जूस पर रहते हुए कई किलो वजन कम किया जा सकता है। इस प्रयोग को लगातार १५ दिन करने के पश्चात् १०-१५ दिन छोड़कर पुनः किया जा सकता है।

मोटापा कम करने की घरेलू विधि

एक चम्मच त्रिफला चूर्ण को रात्रि में २०० मिली पानी के साथ भिगोकर रखें। प्रातः उबालें तथा आधा शेष रहने पर कुछ शीतल होने पर इसमें दो चम्मच शहद मिलाकर पिऐं, कुछ ही दिन के सेवन से कई किलो वजन कम हो जाता है

लक्ष्मी का स्वयंवर

लक्ष्मी ने अपना स्वयंवर रचाया। सब राजाओं को आमन्त्रित किया। घोषणा यह की गयी कि मैं उसको अपना पति वरण करूँगी जो मुझे नहीं चाहेगा। मेरा पति सदा निःस्पृह रहेगा। अपने संकल्प के अनुसार जिस पर भी उसने अपनी दृष्टि डाली सबको सकाम पाया। खोज करते-करते आखिर उसे एक ऐसा दिव्य पुरुष मिल गया जो लक्ष्मी के द्वारा उसके समक्ष साक्षात् उपस्थिति होने पर भी अपनी अनन्त शान्ति में डूबा रहा। लक्ष्मी को देखने पर भी उसके मन में किञ्चित भी हल-चल पैदा नहीं हुई, पूर्ण उदासीन बना रहा। ऐसे अद्भुत पराक्रमी देव पुरुष का नाम है- 'विष्णु भगवान्। इस संसार के समस्त वैभव को यदि लक्ष्मी का रूप माना जाए, तो उसके स्वामी हैं सर्वत्र कण-कण में व्याप्य रहे स्वयं भगवान्। यह एक ऐसा रूपक है, जिसने अपने अन्दर प्रचुर अर्थ समेटा हुआ है। मनुष्य मात्र ही लक्ष्मी को अपनी अर्धांगिनी बनाना चाहता है। पर उसने तो पहले ही यह प्रतिज्ञा कर ली है कि ऐसे कामुक व्यक्ति को मैं कभी पसन्द नहीं करूँगी जो मेरा प्यासा है, चाहे फिर वह कितना ही रूपवान्, गुणवान्, विद्वान्, बलवान् पुरुषार्थी जो कुछ भी हो, मेरे लिए उसका कोई मूल्य नहीं है। मेरी तो बस एक ही शर्त है- सर्वथा निःस्पृह, अकाम।

लक्ष्मी का स्वयंवर

स्यात् संसार में इसलिए प्रायः यह दृश्य देखने को मिल रहा है। रात-दिन मारा-मारी करने पर भी मनुष्य उसे प्राप्त नहीं कर पा रहा। यदि उसने प्राप्त कर लिया होता, तो उसकी चाह मिट जाती। पाने के लिए प्रयास तो तब तक किया जाता है जब तक वह चीज अप्राप्त रहती है। किसी भी चीज को व्यक्ति ने अभी तक प्राप्त नहीं किया है, इसमें यही प्रमाण है कि वह असन्तुष्ट है।

चाहे कोई व्यापार कर रहा है या उद्योगपति है, श्रमिक है या शिल्पी है, अध्यापक है या प्राध्यापक है, सैनिक है या पुलिस कर्मचारी है, साधु है या गृहस्थ, सब-के-सब ही तो लक्ष्मीपति बनना चाहते हैं। पर कोई, भी तो नहीं बन पा रहा। सब अपने-अपने स्तर पर नये-नये उपाय खोजने में लगे हैं- एक उपाय से नहीं तो दूसरे उपाय से ही वह प्रसन्न हो जायेगी, ऐसी मन में आशा लगाये रात्रिंदिवा अपना भरसक प्रयत्न कर रहे हैं, पर सब व्यर्थ। उसकी प्राप्ति का जो मूल उपाय है, उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दे पा रहा। इसलिए सब प्रयत्न निष्फल हो जाते हैं, होते जा रहे हैं।

लक्ष्मीपति बनने का अर्थ है- व्यक्ति का पूर्ण शान्त, सन्तुष्ट, अकाम व स्पृहारहित हो जाना और सन्तुष्ट व निःस्पृह होने का अर्थ है- लक्ष्मीपति बन जाना। यद्यपि मोटी नजर से देखने पर ये दो चीजें दिखाई देती हैं पर वस्तुतः एक ही तथ्य के ये दो पहलू हैं। दो स्थानों से एक ही चीज को देखा जा रहा है। लक्ष्मीपति का अर्थ है विष्णु की तरह पूर्ण निःस्पृह, जो अपने लिए कुछ भी नहीं चाहता। दूसरी तरफ से कहना होगा- पूर्ण सन्तुष्ट होने का अर्थ है- लक्ष्मीपति। कारण? उसकी कोई चाह नहीं है। इसी बिना पर तो लक्ष्मी का स्वामी बना है। जो अपने दिल में चाह लिये बैठे हैं- लक्ष्मी के स्वामी तो वे त्रिकाल में भी नहीं बन सकते, क्योंकि उसका ऐसा ही व्रत है।

हाँ! लक्ष्मी उन लोगों पर दया करके अपने दास, अपने भृत्य के रूप में अवश्य स्वीकार कर लेती है। यह उसकी कृपा ही

समझनी चाहिए जो कम-से-कम उन सकाम लोगों को अपना किंकर, अपना नौकर, अपना दास बनाकर रखने के लिए तो वह सहमत हो गयी। आखिर तो विष्णु की पत्नी है। अपने घर पर आये लोगों को सर्वथा निराश करके कैसे लौटा सकती है? यह समस्त संसार ही लक्ष्मी की सेवा करने में जुटा हुआ है। यह जगत् रूपी विशाल उद्योग लक्ष्मी ने ही चालू किया हुआ है। विभिन्न विभागों में उसने कार्यकर्त्ताओं की नियुक्ति कर दी है। उनके प्रयत्न व बुद्धि-कौशल को देखते हुए उनका अंशदान उन्हें देती रहती है। इन नौकरों के असंख्य भेद व स्तर हैं। कुछ एक हजार रुपये मासिक पर काम कर रहे हैं तो कोई दस लाख मासिक पर। किसी को केवल भोजन मात्र पर रखा हुआ है तो किसी को कुछ नाम मात्र सुविधाओं पर।

इस महासमृद्धिशालिनी देवी के राज्य में कोई-कोई नौकर तो अरबों-खरबों तक सैलरी पाने वाला है। विद्या विभाग में जो लोग काम कर रहे हैं, उनमें से किसी को तो यह पूरी तपस्या कराती है, किसी को माला-माल भी कर देती है। तपस्या उन्हें करनी पड़ती है, जो न तो लक्ष्मीपति बनने की शर्त पूरी कर पाते हैं और न ही उसके नौकर बनकर रहना चाहते हैं अर्थात् जो उसके आज्ञापालक सेवक या दास के रूप में भी नहीं रहना चाहते, उन्हें इसकी तरफ से कोई प्रोत्साहन नहीं दिया जाता। हाँ! कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जिनका कि इसने मित्र बनकर रहना स्वीकार कर लिया है। उनका यह अवश्य ही उनकी आवश्यकतानुसार समय-समय पर सहयोग करती रहती है। यह तो पूर्ण रूप से ही इसकी इच्छा पर निर्भर करता है कि किसको यह अपना मित्र बनाती है या नहीं बनाती।

लक्ष्मीपति, लक्ष्मी के दास, लक्ष्मी के मित्र, लक्ष्मी के द्वारा उपेक्षित, संसार में चार प्रकार के लोग देखने में आते हैं। मित्रों की भी यद्यपि आंशिक सेवा लक्ष्मी के द्वारा कर दी जाती है, पर यह हाथ जोड़े सतत् जिसकी सेवा में उपस्थित रहती है वह तो वही व्यक्ति होगा जो पूर्ण अकाम, सर्वथा निःस्पृह हो गया है। लक्ष्मी के जो दास हैं, वे लक्ष्मी के यन्त्र बने हुए है। लक्ष्मी उनसे अपना काम करवाती है और उनकी मजदूरी दे देती है। जो कुछ भी काम नहीं करना चाहते- सर्वथा निकम्मे हैं- लक्ष्मी उन्हें उनके भाग्य पर छोड़कर मुँह फेर लेती है।

संसार में ऐसे सन्त पुरुष देखने में आते हैं जो पूर्ण निःस्पृह जीवन जीते हैं, एक मात्र वे ही लक्ष्मी के स्वामी बनकर सर्वथा दुःख रहित जीवन जीया करते हैं। ऐसे ही महान् आत्माओं की सेवा करने के लिए लक्ष्मी राजी होती है- ऐसी श्री महाराज की शिक्षा है। कवि कहता है-

अर्थस्य पुरुषो दासो दासस्त्वर्थो न कस्यचित्।
तस्यार्थस्तु सदा दासो य एनं समुपेक्षते।। (महाभारत)

(तुलना करें- महाभारत भीष्मपर्व ४३.४१-५६-७६-८२)

अर्थात् अर्थ के सभी दास हैं, चाकर हैं, अर्थ किसी का दास नहीं। अर्थ उसी का सदा दास है, जो उसकी उपेक्षा करता है। सचमुच, अर्थ जिसको अपनी ओर आकृष्ट न कर सके, वही ज्ञानी है। वेद में भी कहा गया है-

अकामो धीरो अमृतः स्वयम्भू रसेन तृप्तो न कुतश्चनोनः।
तमेव विद्वान्न बिभाय मृत्योरात्मानं धीरमजरं युवानम्।।

- अथर्ववेद १०/८/४४

साभार- विकीपीडिया

ऋषि दयानन्द- मेरी दृष्टि में

ऋषि दयानन्द– आर्यावर्तीय राष्ट्र का पूरा मानचित्र (ब्लूप्रिण्ट) तैयार करनेवाले महापुरुष

अपने जीवन की एक वैयक्तिक घटना का उल्लेख करूँ तो आप बुरा नहीं मानेंगे। सन् १९३१ की बात होगी। मैं गुरुकुल कुरुक्षेत्र की सातवीं कक्षा में पढ़ता था। उस समय गुरुकुल के वार्षिकोत्सव पर हम सब विद्यार्थी अच्छे-अच्छे वेदमन्त्र, संस्कृत के श्लोक और हिन्दी के दोहों तथा सूक्तियों के 'मोटो' बनाकर पण्डाल में सजावट के लिए टांगा करते थे। मुझे पता नहीं क्या सूझी कि मैंने एक 'मोटो' अंग्रेजी में बनाया। उससे पहले गुरुकुल में शायद ही किसी ने अंग्रेजी का मोटो बनाया हो। वह मोटो था अब्राहम लिंकन का अमर वाक्य **'If slavery is not wrong nothing is wrong'** यदि गुलामी पाप नहीं है तो कुछ भी पाप नहीं है। यह मोटो बनाकर उत्सव से पूर्व सन्ध्या को मैंने मंच पर सबसे आगे लगा दिया। अगले दिन जब अम्बाला के अनेक रायबहादुर और ब्रिटिश सेवा में नियुक्त गुरुकुल के हितैषी दानी महानुभाव उत्सव में आए और उनकी दृष्टि इस मोटो पर पड़ी तो सबसे पहला काम उन्होंने यही किया कि उस मोटो को वहाँ से हटवा दिया और अधिकारियों से उस ब्रह्मचारी को गुरुकुल से निकाल देने की माँग की जिसने ऐसी गुस्ताखी की थी। अस्तु, मुझे परिस्थितिवश गुरुकुल से निकाला तो नहीं गया, पर **तभी से मेरे मन में यह धारणा बैठ गई कि ब्रिटिश राज्य को बनाए रखने में अपने आकाओं से भी ज्यादा उत्साही वे भारतीय थे जिनके उस राज्य से स्वार्थ सिद्ध होते थे।** तभी से मेरे मन में उनके प्रति तीव्र आक्रोश भर गया ।

कुछ लोग ऋषि के अखण्ड ब्रह्मचर्य पर मुग्ध हैं। महात्मा गाँधी कहा करते थे 'His brahmacharya is my envy and failure' उनका ब्रह्मचर्य मेरे लिए ईर्ष्या की वस्तु है पर मैं उसमें विफल हूँ। कुछ लोग उनकी वाग्मिता और शास्त्रार्थ-पटुता पर मुग्ध हैं। कुछ लोग उन्हें परम वेदोद्धारक और प्रबल समाज सुधारक कहकर सन्तुष्ट होते हैं, तो कुछ उन्हें अबलाओं और अनाथों का रक्षक कहकर उनकी प्रशंसा के गीत गाते हैं। **पर मैं उनकी उस प्रखर राष्ट्रचेतना पर मुग्ध हूँ जो उनको अन्य सब महापुरुषों से एकदम अलग, पर्वतशिखरों में सबसे पृथक् और सबसे ऊँचा शिखर सिद्ध करती है।** मुझे उनका वेदोद्धारक और समाज सुधारक आदि भी रूप स्वीकार्य हैं, क्योंकि उनका जीवन इतना बहु-आयामी है कि किसी एक दिशा में उसे बाँधा नहीं जा सकता। पर जहाँ तक राष्ट्रचेतना का प्रश्न है, उनसे बढ़कर आप्त राष्ट्रपुरुष मुझे दिखाई नहीं देता- जिसने राष्ट्र की पूरी अस्मिता को, पूर्ण 'स्व' को, आत्मसात् किया हो- फिर चाहे वह देश वाला रूप हो, चाहे राष्ट्रवाला, चाहे राज्य वाला और उसे पूरा शास्त्रीय आधार प्रदान किया हो। उन्होंने राष्ट्र का पूरा मानचित्र (ब्लूप्रिण्ट) तैयार कर दिया है, अब उसमें रंग भरने वाले की आवश्यकता है। मेरा कहना केवल इतना है कि आर्यसमाज के तम्बू में एक बाँस बेशक वेद और धर्म का लगाइए, दूसरा बाँस समाज सुधार का और तीसरा अबला-अनाथ रक्षा का और चौथा पाण्डित्य और शास्त्रार्थ का, **पर तम्बू के बीचोंबीच सबसे मोटा बाँस राष्ट्रचेतना का लगा दीजिए। इसके बिना ऋषि की आत्मा के साथ न्याय नहीं होगा।**

स्रोत- पण्डित क्षितीश वेदालंकार ग्रन्थावली, खण्ड 1 पृष्ठ 220-221
सम्पादक-द्वय - डॉ. विवेक आर्य एवं डॉ. वेदव्रत आलोक
प्रस्तुतकर्त्ता- भावेश मेरजा

गुलाम नबीः सोनिया बचाए कांग्रेस को

कश्मीरी नेता गुलाम नबी आजाद का कांग्रेस को छोड़ देना कोई नई बात नहीं है। उनके पहले शरद पवार और ममता बेनर्जी जैसे कई नेता कांग्रेस छोड़ चुके हैं लेकिन गुलाम नबी का बाहर निकलना ऐसा लग रहा है, जैसे कांग्रेस का दम ही निकल जाएगा। कांग्रेस के कुछ छोटे-मोटे नेताओं ने गुलाम नबी आजाद के मोदीकरण की बात कही है, जो कुछ हद तक सही है, क्योंकि नरेन्द्र मोदी ने बेहद भावुक होकर गुलाम नबी को राज्यसभा से विदाई दी थी। लेकिन कई अन्य कांग्रेसी नेताओं की तरह गुलाम नबी आजाद भाजपा में शामिल नहीं हो रहे हैं। वे अपनी पार्टी बनाएँगे, जो जम्मू-कश्मीर में ही सक्रिय रहेगी। वे कोई अखिल भारतीय पार्टी नहीं बना सकते। जब शरद पवार और ममता बेनर्जी नहीं बना सके तो गुलाम नबी के लिए तो यह असम्भव ही है। यह हो सकता है कि वे अपने प्रान्त में भाजपा के साथ हाथ मिलाकर चुनाव लड़ लें। सच्चाई तो यह है कि पिछले लगभग ५० साल से कांग्रेस एक प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी की तरह काम कर रही है। कांग्रेस की देखादेखी सभी पार्टियाँ उसी ढर्रे पर चल पड़ी हैं। भाजपा भी उसका अपवाद नहीं है। गुलाम नबी आजाद वास्तव में अब आजाद हुए हैं। उन्होंने नबी की गुलामी कितनी की है, यह तो वे ही जानें लेकिन इन्दिरा गाँधी, संजय गाँधी, राजीव गाँधी और सोनिया गाँधी की गुलामी में उनका पूरा राजनीतिक जीवन कटा है। मुझे खूब याद है, कांग्रेस में गुलाम-संस्कृति की! जब मेरे अभिन्न मित्र नरसिंहरावजी प्रधानमंत्री थे और मैं उनसे मिलने जाया करता था तो मेरे पिताजी की उम्रवाले कुछ मंत्री और गुलाम नबी जैसे मंत्री भी खड़े हो जाते थे और तब तक कुर्सी पर नहीं बैठते थे, जब तक कि मैं न बैठ जाऊँ। गुलाम नबी, जो आज आजादी का नारा लगा रहे हैं, संजय गाँधी के साथ उनके रिश्तों पर अन्य कांग्रेसी नेताओं की टिप्पणियाँ पढ़ने लायक हैं। जो नेता गुलाम नबी की निन्दा कर रहे हैं, उनके दिल में भी एक गुलाम नबी धड़क रहा है लेकिन बेचारे लाचार हैं। राहुल गाँधी के बारे में गुलाम नबी की टिप्पणियाँ नई नहीं हैं। देश की जनता और सारे कांग्रेसी पहले से वह सब जानते हैं। गाँधी, नेहरु, पटेल और सुभाष बाबू की कांग्रेस अब नौकर-चाकर कांग्रेस (एन.सी. कांग्रेस) बन गई। अब यदि अशोक गहलोत या कमलनाथ या चिदम्बरम या किसी अन्य को भी कांग्रेस अध्यक्ष बना दिया जाए तो वह क्या कर लेगा? यह एक शेर उस पर भी लागू होगा-

इश्के-बुतां में जिन्दगी गुजर गई मोमिन,
अब आखिरी वक्त क्या खाक मुसलमां होंगे ?

अब कांग्रेस को यदि कोई बचा सकता है तो वह एकमात्र सोनिया गाँधी ही हैं। वे अपने बेटे को गृहस्थी बनाएँ और अपनी बेटी को अपना गृहस्थ चलाने को कहें और पार्टी में ऊपर से नीचे तक चुनाव करवाकर खुद भी संन्यास ले लें। कांग्रेस की देखादेखी भारत की सभी पार्टियाँ 'ऊर्ध्वमूल' बन गई हैं याने उनके जड़ें छत में लगी हुई हैं। सोनियाजी यदि कांग्रेस को 'अधोमूल' बनवा दें यानि उसकी जड़ें फिर से जमीन में लगवा दें तो भारत के लोकतंत्र की बड़ी सेवा हो जाएगी।

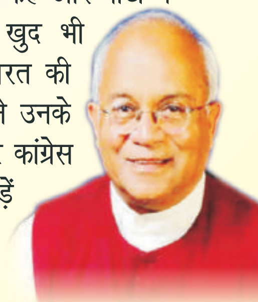

- डॉ. वेदप्रताप वैदिक

जैसे कि आप सब जानते हैं कि आर्यसमाज शब्द का शब्दार्थ है- श्रेष्ठों=अच्छों का संगठन वेदादि शास्त्रों में प्रतिपादित विचारों, मन्तव्यों, सिद्धान्तों के प्रचार के लिए बनाया गया है। जिसके द्वारा संसार में आर्यता का प्रसार हो और जिससे सभी सफल-सुखी हो सकें। इस सबके परिचय के लिए जहाँ महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कार विधि जैसे विशेष ग्रन्थ बनाये वहाँ आर्योद्देश्यरत्न माला, स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश सदृश लघुग्रन्थ भी प्रकाशित किये। इनमें वेदादि, शास्त्रों के निचोड़ को सारगर्भित शब्दों द्वारा जीवन से जुड़ी सभी बातों का सम्पूर्ण परिचय (अतिसंक्षिप्त रूप में समाया) है। उदाहरण की दृष्टि से अध्यात्म के ईश्वर, जीव, प्रकृति, मोक्ष आदि। धर्म की दृष्टि से धर्म, स्वर्ग, तीर्थ, व्रत जैसे। यहाँ केवल अब ईश्वर पर ही विचार करते हैं।

ईश्वर- शब्द का अर्थ है- स्वामी, मालिक, नियन्त्रक। भगवान का सामान्य भाव है- अनेक तरह के ऐश्वर्य वाला। वेद आदि सभी शास्त्रों में संसार के उत्पादक, पालक, व्यवस्थापक आदि (गुण, कर्म के कर्त्ता) को ईश्वर भगवान आदि नाम से स्मरण किया है। क्योंकि जिन भौतिक पदार्थों को हम प्रतिदिन अपने व्यवहार में लाते हैं उनमें से अधिकतर ऐसे हैं, जिनको हमारे जैसे कारीगर बनाते हैं। हाँ, इनके जो लकड़ी लोहा जैसे कच्चे माल हैं और जितने भी सूर्य, चन्द्र, जल, वायु, धरती सदृश प्राकृतिक पदार्थ हैं उनको हमारे जैसा कोई बनाता चलाता दिखाई नहीं देता। निःसन्देह उन पदार्थों को बनाता हुआ, कोई चाहे दिखाई न दे पर इनकी कार्य प्रक्रिया, चालन व्यवस्था, परिवर्तन-विकार की स्थिति यह अनुमान करा देती है, कि ये सब भी किसी कर्ता की कृति, रची हुई रचना अवश्य हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की विविध रचनाओं के साथ आर्यसमाज के पहले-दूसरे नियम में भी जहाँ ईश्वर की सत्ता को सिद्ध करने वाली दो युक्तियाँ दी हैं। वहाँ द्वितीय नियम में ईश्वर के स्वरूप, गुणों का परिचय दिया गया है। इनका अन्तिम शब्द है- सृष्टिकर्त्ता अर्थात् उत्पन्न होने वाले को करने बनाने वाला। इस नियम के अन्तिम अंश (उसी की ही उपासना करनी चाहिए) में इस संसार से लाभ लेने वालों को सन्देश दिया है कि ईश्वर की कृतज्ञता (किये हुए उपकारों) को स्वीकार करते हुए उसकी उपासना (अर्थात् उससे जुड़ने, उसका अनुभव करने का यत्न) करना चाहिए। तभी ऐसा करने पर व्यक्ति में आत्मिक बल, सन्तोष, शान्ति उभरती है।

भक्ति- इसका सबसे सरल ढंग यह है कि प्रायः शौच आदि दैनिक आवश्यक कृत्यों से निपट कर 'ओ३म्' की गुंजार करें। इसकी सीधी प्रक्रिया यह है कि ईश्वर के अधिक से अधिक 'स्वरूप' के बोधक सर्वोत्तम नाम 'ओ३म्' को लम्बी सांस के साथ थोड़ा सा मुख खुला रखते हुए ओठों से दीर्घ स्वर के साथ ओ३म् की गुंजार करें। इस गुंजार के साथ ही साथ मन में ओ३म् वाच्य ईश्वर के स्वरूप का चिन्तन, ध्यान करें। इस प्रकार एक गुंजार के पश्चात् थोड़ा उठकर पुनः ओ३म् की गुंजार करें। ओ३म् एक प्राकृतिक, स्वाभाविक ध्वनि है। अतः श्वास के साथ आप इसको जितना भी दीर्घ, लम्बा, गहरा करना चाहें सरलता से कर सकते हैं। इसीलिए इसको उद्गीथ प्राणायाम कह सकते हैं। तब ऐसी स्थिति में 'एक पन्थ दो काज' के अनुसार प्रभु भक्ति के साथ ही शरीर की आरोग्यता, स्वस्थता, सुदृढ़ता का भी यह एक अचूक साधन बन जाता है। उपासना को ही पूजा, भक्ति, अर्चना, वन्दना आदि भी कह दिया जाता है। उपासना की दृष्टि से यह बात विशेष ध्यान देने योग्य है, कि ईश्वर सर्वव्यापक के साथ नित्य भी है। नित्य का

भाव होता है- सदा रहने वाला। ईश्वर की नित्यता का भाव है, कि वह सदा-सर्वत्र, एकरस, एक रूप, निर्विकार है। अर्थात् वह एक ऐसा अभौतिक पदार्थ तत्व है, जिसमें किसी प्रकार का कैसा भी परिवर्तन-विकार नहीं होता न ही आता है। अर्थात् एक जीवित चेतन सत्ता है वह। अतः आर्य समाज मानता है कि ईश्वर की उपासना किसी विशेष स्थान पर किसी विशेष रूप को सजा कर और किसी विशेष प्रकार के वस्त्रादि पहन कर किसी भौतिक वस्तु को देखकर नहीं होती और न ही इसके लिए लम्बी-लम्बी यात्रायें करने, न ही घण्टों लाईनों में खड़े होने की जरूरत है। क्योंकि वह नित्य, सर्वव्यापक ईश्वर हमारे हृदयों में सदा विराजता है। अतः केवल दिल की भावनाओं के साथ याद करने, जुड़ने की जरूरत है। 'अपना प्रभु अपने दिल में है' भावना से भरने की ही जरूरत है।'

ईश्वर स्वरूप- आइए! अब कुछ ईश्वर के स्वरूप पर भी विचार कर लें। ईश्वर का एक मुख्य गुण सर्वव्यापक है। सर्वव्यापक होने से वह स्वतः सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, सर्वान्तर्यामी, सर्वेश्वर, सर्वाधार, सर्वकर्त्ता आदि गुण युक्त है। सर्वव्यापक संख्या में एक ही होता है। दो होने पर व्यापकता बट जाएगी। ऐसे ही सर्वव्यापक निराकार ही होता है, क्योंकि एकदेशी ही साकार होता है।

कर्त्ता द्वारा की जाने वाली क्रिया तभी होती है। जब उसके साथ कर्त्ता का सम्बन्ध होता है, वहाँ उसका अस्तित्व होता है। संसार रूपी रचना सब जगह चल रही है। अतः उसका कर्त्ता सब स्थानों पर होने से स्वतः सर्वव्यापक सिद्ध हो जाता है। तभी वह वहाँ प्रकृति को प्रेरणा देकर जगत् रचता है। सर्वव्यापक होने से जब जहाँ जो कुछ होता है, वह उस उसको अपनी सर्वज्ञता से जानता है। अतः कोई कभी-कहीं भी कुछ उससे छिपा नहीं सकता। अतएव वह प्रत्येक के सभी कर्मों का यथासमय यथायोग्य जानता और कर्मफल देता है। अतः यह भ्रम पालना सर्वथा निरर्थक है, कि हम ऐसे ऐसे यह बात छिपा लेंगे या इससे ऐसे बच जायेंगे।

किसी बात की परीक्षा, जाँच सचाई से होती है और सच्चाई का पता कार्य-कारण के नियम से ही होता है। अतः जिस ढंग से जैसे साधनों से जिस स्थिति में आपस के तालमेल द्वारा जो कार्य सफल होता है उसी को ही उस कार्य का कारण कहा जाता है। जैसे कि रसोई में प्रत्येक तैयार होने वाला पकवान इस दृष्टि से स्पष्ट है। ठीक ऐसे ही ईश्वर की सत्ता की सिद्धि के लिए संसार को बनाने चलाने वाले के रूप में युक्ति दी जाती है। अतः जिस स्वरूप गुण वाला ईश्वर ऐसा कर सके। वही ही ईश्वर का स्वरूप है। इसीलिए ऊपर की चर्चा में ईश्वर के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए सर्वव्यापक शब्द के विचार में यह सब दर्शाया गया है।

- आचार्य भद्रसेन दर्शनाचार्य

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्यॉंमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार ₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें "सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

आर्य समाज की रक्षा 'एक यक्ष प्रश्न'

२०२४ और २०२५ में महर्षि दयानन्द का २००वाँ जन्मदिवस तथा आर्य समाज का १५०वाँ स्थापना दिवस विशाल रूप से मनाया जाए इस विषय में आर्य समाज के पदाधिकारी विचार कर रहे हैं। आर्य समाज स्थापना शताब्दी १९७५ के समय जितने संन्यासी, विद्वान्, शास्त्रार्थ महारथी, भजनों के माध्यम से वैदिक सिद्धान्तों को जन-जन तक पहुँचाने वाले प्रतिष्ठित आर्य भजनोपदेशक, समर्पित कार्यकर्त्ता और पदाधिकारी थे। आज वे दृष्टिगोचर नहीं हो रहे हैं। वैदिक सिद्धान्तों के शिक्षण केन्द्र, विद्वानों के निर्माण स्थल, वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित जीवन निर्माण के केन्द्र गुरुकुल थे, आज उनको समाप्त करने का गहन षड्यंत्र तथाकथित सांप्रदायिक संगठन तथा विविध प्रान्तीय शिक्षा बोर्डों के माध्यम से, अदूरदर्शी व्यक्तियों को आर्थिक प्रलोभन (सरकारी सर्विस से प्राप्त अर्थ लाभ) दिखाकर आर्य समाज को कार्यकर्त्ता विहीन बनाने का प्रयत्न हो रहा है। महर्षि दयानन्द ने अष्टाध्यायी, महाभाष्य, निरुक्त, दर्शनशास्त्र, ब्राह्मण एवं वेदादि शास्त्रों के अध्ययन अध्यापन (आर्ष पाठविधि) का उल्लेख किया है। जब तक सरकारी परीक्षा से दूर रहकर इन ग्रन्थों का पठन-पाठन होता रहा तब तक ये ग्रन्थ सुरक्षित रहे तथा विद्वान् भी तैयार होते रहे। गुरुकुलों के तत्कालीन आचार्य आर्थिक प्रलोभन में नहीं आए तथा अपने लक्ष्य वैदिक धर्म की रक्षा में लगे रहे। सन् १९१७ में चेम्सफोर्ड (अंग्रेज अधिकारी) गुरुकुल कांगड़ी को देखने आया उस समय उसने अंग्रेज सरकार की ओर से एक लाख रुपए गुरुकुल को देने की घोषणा की तब स्वामी श्रद्धानन्द ने यह कहकर ठुकरा दिया कि मैं सोने के पिंजरे में बन्द होना नहीं चाहता। उन्होंने सरकारी उपाधियाँ डिग्री लेना भी स्वीकार नहीं किया। विद्यालंकार, वेदालंकार , सिद्धान्तालंकारादि अपनी उपाधियाँ दीं। उस समय गुरुकुल कांगड़ी के जो भी स्नातक निकले उन्होंने अपनी विद्वता से दुनिया के हर क्षेत्र में नया कीर्तिमान स्थापित किया। गुरुकुल झज्जर (हरियाणा) सन् १९६५ में श्री भक्त दर्शन शिक्षा राज्य मंत्री (भारत सरकार) आए थे। उन्होंने सरकारी अनुदान देने और गुरुकुल में सरकारी परीक्षा होनी चाहिए का सुझाव दिया था। उसका तुरन्त विरोध करते हुए आचार्य भगवान देव (स्वामी ओमानन्द जी) ने कहा था कि मैं सरकारी नौकर नहीं मैं विद्वान् तैयार कर रहा हूँ और किसानों से ब्रह्मचारियों के लिए अन्न माँगता हूँ। इसी भावना का परिणाम था कि १९६५ से पहले जितने विद्वान् स्नातक गुरुकुल झज्जर से निकले उन्होंने आर्य समाज के हर क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया। सरकारी परीक्षाओं के शुरू होने पर वह शृंखला बन्द हो गई। चाहे गुरुकुल कांगड़ी हो, गुरुकुल वृन्दावन हो, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हो। सबने अपनी उपाधियाँ, अलंकार, स्नातक भास्कर दीं। लेकिन सरकारी सहयोग नहीं लिया। आर्य समाज के लिए एक से एक मूर्धन्य विद्वान् तैयार हुए। जिन्होंने लेखन, प्रचार, शास्त्रार्थ, पत्रकारिता और देश की स्वतंत्रता के लिए महान् कार्य किया और आत्म बलिदान दिया। देव दयानन्द के अनुयायियों का नैतिक कर्तव्य है कि दयानन्द के द्वारा निर्दिष्ट आर्ष पाठविधि के पठन-पाठन की प्रक्रिया को सुरक्षित रखें।

सरकारी परीक्षा देने व सरकारी नौकरी करने की कामना वाले व्यक्तियों पर ही ध्यान न देकर, आर्ष पाठविधि के पठन-पाठन और उसकी सुरक्षा के लिए अपना जीवन समर्पित करने वाले व्यक्तियों के लिए दानी महानुभाव और पदाधिकारी पूरा ध्यान दें। जिन्होंने अपना लक्ष्य-

(ब्राह्मणेननिष्कारणो धर्मः षडंगो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्चेति)

प्रत्येक गुरुकुल में सरकारी परीक्षा देने वालों के अतिरिक्त आर्ष पाठविधि के पठन-पाठन की एक कक्षा हो भले ही उसमें दो चार समर्पित बालक-बालिकाएँ हों। अध्ययन के

समय और अध्ययन के बाद निस्वार्थ भाव से आर्य समाज का कार्य करने वाले समर्पित विद्वानों को उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति उदारमना दानी महानुभाव करें। वैदिक धर्म की रक्षा का व्रत लेने वाले समर्पित विद्वानों के द्वारा ही वैदिक धर्म सुरक्षित रहेगा। यह बात तथाकथित नेताओं को हृदय में डाल लेनी चाहिए अन्यथा आर्य समाज की स्थिति प्रार्थना समाज और ब्रह्म समाज की तरह हो जाएगी। सन् १८२६ या उसके आसपास बंगाल में ब्रह्म समाज की स्थापना हो गई थी तथा १८६६ में महाराष्ट्र में प्रार्थना समाज की स्थापना हो गई थी। अपने लक्ष्य से भटकने के कारण दोनों संस्थाओं का नाममात्र शेष रह गया है। कहीं यही स्थिति आर्य समाज की ना हो जाए। वे लोग मरे हुए हैं जो अपने सामने अपने कुल समाज का विनाश होता देखते हैं। (मृतास्ते ये तु पश्यंति देशभंगं कुलक्षयम) परिवार या समाज ईंट पत्थरों से बने हुए भवन से सुरक्षित नहीं रहता। अपितु उन भवनों में रहने वाले व्यक्तियों से समाज या परिवार सुरक्षित रहता है। व्यक्तियों के निर्माण के लिए पंच महायज्ञ, वर्णाश्रम व्यवस्था, षोडश संस्कार विधि को व्यवहार में अपनाना आवश्यक है। जनसम्पर्क के लिए जनसेवा जिसे ऋषि ने स्पष्ट किया था कि **'संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है'** इस ओर ध्यान न देने से भी समाज में शिथिलता आ रही है। आज नेता, पदाधिकारी, विद्वान्, संन्यासी अपने उत्तराधिकारियों का निर्माण करने के विषय में गंभीर नहीं हैं। एक दिन उन्हें दुनिया से जाना ही है। इसका कोई विकल्प नहीं है। अतः अपने सामने उत्तराधिकारी तैयार किया जाए। अपने अनुभव से उनका मार्ग प्रशस्त किया जाए और भविष्य में आने वाली समस्याओं से सावधान किया जाए। इस ओर ध्यान न देना यह भी एक सामाजिक अपराध है। अपने उत्तराधिकारी को तैयार करें और ऋषि दयानन्द के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करें। ऋषि दयानन्द ने लगभग ५८-५६ वर्षों की आयु में अपनी उतराधिकारिणी परोपकारिणी सभा बना दी थी। इतना ही नहीं अपनी वसीयत में अपने अंत्येष्टि संस्कार की भी चर्चा कर दी थी जिससे हजारों वर्षों से चली आ रही (संन्यासी को जल समाधि की) मिथ्या परम्परा को दयानन्द ने तोड़ दिया। आर्य समाज से तहरीर और तकरीर लेखनी और वाणी से प्रचार का कार्य चलता रहे यह पण्डित लेखराम ने अन्तिम समय में कहा था। और यह तभी सम्भव है जब आर्य समाज कार्यकर्त्ताओं के निर्माण पर केन्द्रित होगा। कार्यकर्त्ताओं का निर्माण आर्यवीर दल व आर्य वीरांगना दल के शिविरों से आर्य समाज की दैनिक शाखाओं से होगा। विद्वानों का निर्माण, जीवनदानी कार्यकर्त्ताओं का निर्माण गुरुकुलों से होगा। इस लिए आर्य समाज के भविष्य को देखते हुए विद्वान् निर्माण व कार्यकर्त्ता निर्माण का कार्य तेज करना चाहिए।

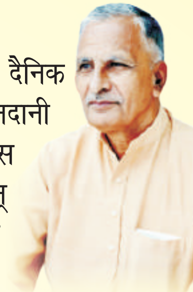

लेखक- डॉ. सोमदेव शास्त्री, मुम्बई

जीवन की सार्थकता विशाल हृदय से

भारत की गरिमा रही है कि उसने युद्ध के समय भी मानवता को स्थिर रखा है ऐसा ही एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है।

पेशवा वाजीराव की सेनाओं ने हैदराबाद के निजाम की सेनाओं को चारों ओर से घेर लिया था। निजाम की सेनाओं का रसद पानी समाप्त होने को था। इधर ईद का अवसर आ गया। निजाम ने एक पत्र लिखकर भिजवाया। पत्र में लिखा था- हमारे पास अब जरा भी अनाज नहीं रहा है कल ईद है, क्या इस मौके पर हमारे सैनिकों को भूखा रखना चाहते हो?

पेशवा को पत्र मिला उन्होंने पढ़ा और अपने सेनापति को बुलाकर विचार-विमर्श किया। सेनापति ने कहा अब शत्रु शिकंजे में है। इसलिये उसकी पराजय हर हालत में निश्चित है। हमें कुछ सहयोग करने की जरूरत नहीं है।

पेशवा ने सेनापति से कहा- आप ठीक कहते हैं निजाम हमारा शत्रु है और इस समय वह फंसा हुआ है हमारी विजय निश्चित है। उसकी हार भी निश्चित है, किन्तु हम मनुष्य हैं। भूखी सेना पर आक्रमण करके विजय प्राप्त करना शूरता या वीरता नहीं है। दुनिया को ज्ञात होना चाहिये कि महाराष्ट्र के वीर सैनिक समान बल वालों से लड़कर ही विजय प्राप्त करना चाहते हैं। वे क्रूर और क्षुद्र हृदय नहीं हैं जो भूखों पर आक्रमण करें। फिर ईद उनका पर्व है तो हमें उनका सहयोग अवश्य करना चाहिये। उन्होंने सेनापति को आदेश दिया किया ईद कि पवित्र दिन के से पूर्व ही निजाम के यहाँ अनाज भेजने की व्यवस्था की जाय।

तुरन्त अनाज से भरी बैलगाड़ियाँ पेशवा के सैनिकों ने निजाम के सैनिकों के लिये भेजना आरम्भ कर दिया।

भारत की इस गरिमामयी विशाल हृदयता को देखकर निजाम आश्चर्य चकित था।

❚❚❚

साभार- हितोपदेशक

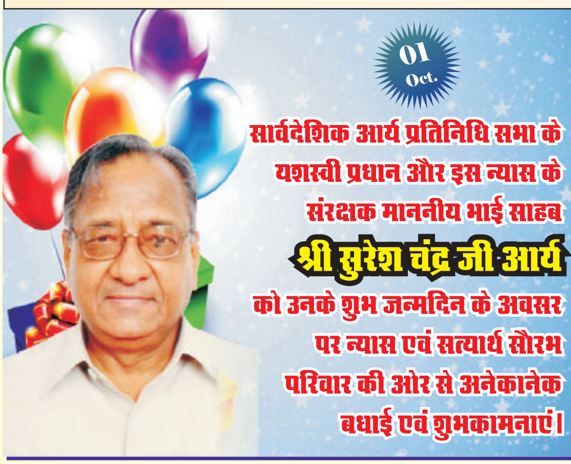

समाचार

स्वर्गीय घनश्याम सिंह जी कृष्णावत तत्कालीन समय के भामाशाह -डॉ. आनन्द गुप्ता

उदयपुर। १८ सितम्बर २०२२। नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र के तत्वावधान में स्मृतिशेष माननीय घनश्याम सिंह जी कृष्णावत की जयन्ती के उपलक्ष्य में कवि सम्मेलन के आयोजन के अवसर पर इंडियन मेडिकल एसोसिएशन, उदयपुर के अध्यक्ष डॉ. आनन्द गुप्ता ने कहा कि स्वर्गीय श्री घनश्याम सिंह जी कृष्णावत को तत्कालीन समय का भामाशाह कहा जाये तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। माननीय श्री घनश्याम सिंह जी समाज सेवा के साथ साथ विभिन्न संस्थाओं को पुनीत कार्यों हेतु भामाशाह की भांति दान भी प्रदान करते थे। होटल उद्योग को भी उन्होंने नये नये आयाम प्रदान किए।

सभा को सम्बोधित करते हुए प्रादेशिक परिवहन अधिकारी श्री पी. एल. बामणिया ने कहा कि स्वर्गीय श्री घनश्याम सिंह जी कृष्णावत का योगदान स्वास्थ्य सेवाओं में सहयोग के अतिरिक्त रक्तदान कार्यक्रमों, शहर के चतुर्दिक विकास में भी रहा है उनसे सभी को प्रेरणा लेनी चाहिए।

इस अवसर पर सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. शंकर बामणिया ने कहा कि नवलखा महल में श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास द्वारा जो प्रकल्प तैयार किए गए हैं उनसे आमजन यहां आकर भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों का दिग्दर्शन प्राप्त करते हैं। यहां १६ संस्कारों जो प्रकल्प तैयार किया गया है वह अद्भुत है ऐसा प्रकल्प अभी तक विश्व में कहीं पर भी तैयार नहीं हुआ है।

इस अवसर पर होटल चूण्डा पैलेस,उदयपुर के प्रोप्राइटर श्री यदुराज सिंह जी कृष्णावत ने कहा कि नवलखा महल में ऐसे क्रान्तिकारियों के चित्र प्रकाशित किए गए हैं जिन्होंने अपना जीवन समर्पित किया परन्तु आमजन की स्मृति में उनका नाम नहीं है। ऐसे महापुरुषों के योगदान से आमजन यहां आकर परिचित होता है साथ ही आर्यावर्त चित्रदीर्घा के माध्यम से मनीषियों, संन्यासियों, युग पुरुषों के जीवन से हमें प्रेरणा प्राप्त होती है।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए डर्माडेन्ट क्लिनिक,उदयपुर के सीईओ एवं प्रसिद्ध चर्म रोग विशेषज्ञ डॉ. प्रशान्त अग्रवाल ने बताया कि नवलखा महल वह स्थल है जहां युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने साढ़े छह माह विराजकर सत्यार्थ प्रकाश का प्रणयन सम्पूर्ण किया था। परन्तु यह महल सरकार के स्वामित्व में होने के कारण यहां आबकारी विभाग का शराब का गोदाम था। लम्बे प्रयासों के पश्चात् वर्ष १९९२ में यह भवन प्राप्त हुआ। उसके पश्चात् यहां से सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, सामुदायिक विकास जैसे प्रकल्प चलाये जा रहे हैं। आर्य समाज के दानदाताओं के सहयोग से नवलखा महल में नये नये प्रकल्प स्थापित किए गए हैं। आज यहां के प्रकल्पों के कारण नवलखा महल विश्व पटल पर अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यहां पर श्री सुरेश चन्द्र दीनदयाल गुप्त मल्टीमीडिया सेन्टर की स्थापना की गई है वहीं दानदाताओं के सहयोग से १६ संस्कारों की संस्कार वीथिका का निर्माण किया गया है।

इस अवसर पर स्मृतिशेष माननीय श्री घनश्याम सिंह जी कृष्णावत के पुत्र श्री वीरमदेव सिंह कृष्णावत ने कहा कि यहां के प्रकल्पों से प्रेरणा लेकर माननीय श्री घनश्याम सिंह जी कृष्णावत की स्मृति में हमने नवलखा महल स्थित अतिथि कक्षों के सौन्दर्यीकरण करने हेतु इनके नवीनीकरण का कार्य हाथ में लिया और यह कार्य अतिशीघ्र पूर्ण हो जायेगा।

इसके पश्चात् काव्य संध्या का आयोजन किया गया जिसका संचालन प्रसिद्ध कवि श्री ब्रजराज सिंह जगावत ने किया। कार्यक्रम का प्रारम्भ यज्ञ से श्री इन्द्रप्रकाश यादव के पौरोहित्य में हुआ।

कार्यक्रम में आर्य समाज, हिरणमगरी ,उदयपुर के प्रधान श्री भंवर लाल आर्य, न्यास के संयुक्त मंत्री डॉ. अमृतलाल तापड़िया, मंत्री श्री भवानीदास आर्य, न्यासी श्रीमती ललिता मेहरा, कार्यालय मंत्री श्री भंवर लाल गर्ग, जन सम्पर्क सचिव श्री विनोद राठौड़, श्रीमती सरला गुप्ता, कर्नल सोहनलाल, आर्य समाज पिछोली के श्री हेमांग जोशी, श्री विजय बंसल, श्री रमेश पालीवाल, गाइड श्री शम्भूलाल, सेवक श्री देवीलाल पारगी तथा शहर के आर्य समाज से जुड़े पदाधिकारी एवं आर्यजन उपस्थित थे। श्री इन्द्रप्रकाश यादव के शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

-भंवरलाल गर्ग, कार्यालय मंत्री

श्री सुरेंद्र कुमार रैली जी आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली के प्रधान निर्वाचित

''आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य'' की साधारण सभा का अधिवेशन एवं त्रिवार्षिक निर्वाचन रविवार, दिनांक -१८ सितंबर २०२२ को दिल्ली प्रदेश की समस्त आर्य समाजों से आए प्रतिनिधियों की भारी उपस्थिति में आर्य समाज हनुमान रोड के सभागार में पूर्ण सौहार्द्र पूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ जिसमें प्रसिद्ध लेखक एवं शिक्षाविद् श्री सुरेंद्र कुमार रैली जी को सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित किया गया।

श्री रैली जी ने उपस्थित जन समुदाय का हृदय की अनंत गहराइयों से आभार व्यक्त किया तथा सभी से आर्य समाज के कार्यों को और अधिक गति देने के लिए सहयोग देने के लिए आग्रह किया।

ऐतिहासिक दिन !

कुरुक्षेत्र में स्थित दयानन्द महिला महाविद्यालय को आज ३० नवम्बर, २०२१ को नैक की रैंकिंग में। एग्रेड प्राप्त हुआ है। इस उच्चतम स्तर को प्राप्त करने वाला हरियाणा प्रदेश का यह पहला महाविद्यालय है। निश्चित रूप से इस शिखर को प्राप्त करने के लिए महाविद्यालय के सभी सदस्यों ने असाधारण परिश्रम किया है। यह गौरव दिवस है। महाविद्यालय के संरक्षक आदरणीय डा. रामप्रकाश जी, प्रधान आदरणीय डा. राजेन्द्र जी विद्यालंकार एवं प्राचार्या आदरणीया विजेश्वरी शर्मा जी सहित सभी को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं। निश्चय ही यह महाविद्यालय न केवल हरियाणा अपितु पूरे देश का अग्रणी संस्थान है।

शोक संवेदना

आचार्य सदाविजय जी नहीं रहे। ऋषि दयानंद के अनन्य भक्त, आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान व दयानंद महाविद्यालय, अजमेर के पूर्व प्रोफेसर श्रद्धेय श्री सदाविजय जी आर्य का निधन हम सभी व सम्पूर्ण आर्य जगत् के लिए अपूरणीय क्षति है आचार्य जी न्यास के प्रति काफी आत्मीयता रखते थे। न्यास के पुस्तकालय हेतु स्व. पंडित मदन मोहन विद्यासागर के पुस्तकालय से विपुल ज्ञान राशि न्यास को प्राप्त होने में आचार्य जी की ही प्रेरणा तथा भूमिका थी।

श्रीमद्दयानंद सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के सभी पदाधिकारी गण, सदस्य गण उस महान आत्मा को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं और प्रभु से, परिवार को यह असहाय दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।

शोक संवेदना

अत्यंत दुखद समाचार है कि आर्य प्रतिनिधि सभा के कर्मठ अंतरंग सदस्य और हमारे अभिन्न मित्र श्री अशोक जी शर्मा के पिता जी श्री प्रेम चंद जी शर्मा का देहावसान हो गया। हृदय को बहुत दुःख हुवा। पिता के विचारों से पुत्र के विचारों का निर्माण होता है। अशोक जी अपने पिता के परिचय ही हैं। श्रीमद्दयानंद सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के सभी पदाधिकारी गण, सदस्य गण उस महान आत्मा को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं और प्रभु से, परिवार को यह असहाय दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।

वेदमन्त्र पाठ प्रतियोगिता सम्पन्न वरिष्ठ वर्ग में शुभ्र शर्मा एवं कनिष्ठ वर्ग में नेहल जोशी प्रथम

श्री सुरेश चंद्र गुप्ता चैरिटेबल ट्रस्ट एवं आर्य समाज हिरण मगरी उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में वेद मंत्र पाठ प्रतियोगिता आर्य समाज हिरण मगरी सभागार में संपन्न हुई। इस प्रतियोगिता में कनिष्ठ वर्ग में १६ विद्यालय के २६ छात्रों ने भाग लिया जबकि वरिष्ठ वर्ग में १२ विद्यालय के २४ प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में कनिष्ठ वर्ग में सेंट एंथनी विद्यालय की नेहल जोशी प्रथम एवं पंचवटी आलोक माध्यमिक विद्यालय के पार्थ कुमावत द्वितीय स्थान पर रहे। तृतीय स्थान दयानंद कन्या विद्यालय उदयपुर की कृष्णा गर्ग ने प्राप्त किया।

इसी प्रकार वरिष्ठ वर्ग में प्रथम स्थान तुलसी निकेतन विद्यालय के शुभ्र शर्मा ने प्राप्त किया द्वितीय स्थान राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय सेक्टर ४ की कनक जोशी ने प्राप्त किया तृतीय स्थान राजस्थान महिला गेलड़ा विद्यालय की विधि सोनी ने प्राप्त किया। विद्यालय की ट्रहफी कनिष्ठ वर्ग में दयानंद कन्या विद्यालय हिरण मगरी सेक्टर ४ तथा वरिष्ठ वर्ग की विजेता ट्रहफी राजस्थान महिला गेलड़ा उच्च माध्यमिक विद्यालय उदयपुर ने प्राप्त की। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री नरेश चंद्र बंसल ने की। निर्णायक मण्डल में मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष बिहारी लाल जैन एवं रेखा गुप्ता एवं सत्यप्रिय रहे। इस अवसर पर अध्यक्ष महोदय ने संस्कृत भाषा को भारतीय संस्कृति का मूल स्रोत बताया तथा प्रोफेसर जैन ने दैनिक व्यवहार में संस्कृत भाषा के उपयोग को बढ़ाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि पारस्परिक बोलचाल में संस्कृत भाषा का प्रयोग करके ही हम संस्कृत को पुनः व्यवहारिक भाषा के रूप में स्थापित कर सकते हैं। निर्णायक मंडल के सदस्य सत्यप्रिय ने कहा कि वेदों की रचना मंत्र कहलाती हैं जबकि लौकिक छंद श्लोक कहलाते हैं। वैदिक मन्त्रों में मानव जीवन के बेहद उपयोगी निहित हैं जिनका पालन करके हम अपने जीवन में विशिष्टता को प्राप्त कर सकते हैं। मानवमात्र के कल्याण की कामना ही वेदों की मूल भावना है।

ट्रस्ट की अध्यक्ष शारदा गुप्ता ने बताया कि स्वर्गीय सुरेशचन्द्र गुप्ता की स्मृति में यह प्रतियोगिता १९९२ से प्रतिवर्ष निरन्तर आयोजित होती है। इसमें उदयपुर के सभी प्रतिष्ठित विद्यालय के छात्र भाग लेते हैं।

कार्यक्रम का संचालन ललिता मेहरा ने किया एवं धन्यवाद डह्न अमृतलाल तापड़िया ने व्यक्त किया।

हैदराबाद विजय दिवस संपन्न

आर्य समाजियों के बलिदान से हैदराबाद का विलय भारत मे हुआ-स्वामी आर्यवेश रविवार १८ सितम्बर २०२२, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में "हैदराबाद विलय दिवस" की ७४ वीं वर्षगांठ पर बलिदानी सत्याग्रहियों को आर्य समाज कबीर बस्ती पुरानी सब्जी मंडी दिल्ली में यज्ञ कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर श्रद्धेय स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि देश के स्वतंत्रता संग्राम में आर्य समाज का सर्वाधिक योगदान रहा। निजाम ने आर्य समाज पर कई प्रतिबंध भी लगाये, मन्दिरों में घंटी बजाने,ओम ध्वज लगाने और हवन करने पर भी प्रतिबंध लगाये लेकिन आर्य समाज के लंबे चले सत्याग्रह के आगे उन्हें झुकना पड़ा।कांग्रेस सरकार ने आर्य सत्याग्रहियों को ताम्रपत्र देकर सम्मानित किया व पेंशन भी लागू की।अंग्रेजी सरकार की नजर में उस समय आर्य समाजी होना विद्रोही माना जाता था आज उन बलिदानों को स्मरण करने का दिन है। उस सत्याग्रह में १२००० आर्यों ने जेल भरी।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि यह स्वतंत्रता ऐसे ही नहीं मिल गई इसके लिए वीरों ने अपने बलिदान दिए हैं आज उन बलिदानियों को स्मरण करके राष्ट्रीय अखंडता को अक्षुण रखने का संकल्प लेना होगा।आर्य समाज राष्ट्र जागरण का देश भर में अभियान चलाएगा। उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार के मण्डल के अध्यक्ष ओम सपड़ा ने कहा कि आर्य समाज का पुस्तकों के लेखन एवं बोलने का कार्य अनवरत जारी है। वैदिक विद्वान आचार्य गवेन्द्र शास्त्री,गोपाल आर्य,पूर्व पार्षद गुड्डी देवी जाटव,रामचन्द्र आर्य (सोनीपत) ने भी अपने विचार रखे।

– भवदीय, प्रवीण आर्य, मीडिया प्रभारी

सत्यार्थ प्रकाश पहेली – ०५/२२ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली– ०५/२२ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री रतनलाल राजौरा, निम्बाहेड़ा (राज.), श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्रीमती सुनीता सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती रूपा देवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्री प्रधान जी आर्यसमाज; बीकानेर (राज.), श्रीमती उषा देवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती सुप्रिया चावला; जालन्धर (पंजाब), श्री इन्द्रजीत देव; यमुनानगर (हरियाणा), श्रीमती कंचन देवी; बीकानेर (राज.), श्री हीरालाल बलाई; उदयपुर (राज.), श्री गोपाल राव; निम्बाहेड़ा, (राज.), श्री आर.सी. आर्य; कोटा (राज.), श्री हर्षवद्धन; नवादा (बिहार)।

सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य– पहेली के नियम पृष्ठ 25 पर अवश्य पढ़ें।

ईश्वर और ईश्वरकृत पुस्तक (कसौटी)

ईश्वरीय ज्ञान में मनुष्य की आवश्यकता के अनुरूप समस्त ज्ञान-विज्ञान होना चाहिए। क्योंकि मनुष्य को नैमित्तिक ज्ञान की आवश्यकता है। (पूर्व में स्पष्ट कर चुके हैं) इसी कारण यह ज्ञान ईश्वर द्वारा दिया गया है। अतः उद्देश्य की पूर्ति तो होनी चाहिए। बाइबल आदि ग्रन्थों में 'सर्वविद्यामयत्व' को खोजना भी अतीव दुरुह है। परन्तु वेद में बीज रूप में वह समस्त ज्ञान-विज्ञान उपस्थित है जो मानव समुदाय के लिए आवश्यक है। महर्षि दयानन्द ने स्वरचित ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में इसे प्रमाणित किया है। वेद में ब्रह्म-विद्या, सृष्टि-विद्या, पृथिव्यादि लोक भ्रमण, आकर्षणानुकर्षण, प्रकाश्य-प्रकाशक, गणित-विद्या, स्तुति, प्रार्थना, याचना, समर्पण, उपासना, मुक्ति, नौविमानादि-विद्या, तार-विद्या, वैद्यकशास्त्रमूलक, पुनर्जन्म, विवाह, नियोग, राजप्रजा धर्म, वर्णाश्रम, पंचमहायज्ञ आदि विषय मुख्यतः हैं। संक्षेप में कहें तो तृण से लेकर परमेश्वर तक को जानने का साधन वेद है। यहाँ दो बातों का स्पष्टीकरण करना भी उचित होगा।

वेद का सर्वविद्यामयत्व

वैश्वदेवीं वर्चस आ रभध्वं।। – अथर्ववेद १२/२/२८

तेजस्विता के लिये सब विषयों का ज्ञान कराने वाली वेदवाणी का पूरी तरह अभ्यास करो।

प्रथम तो वेद की भाषा के सन्दर्भ में। हमने पूर्व में कहा है कि ईश्वरीय ज्ञान किसी देश विशेष की भाषा में नहीं होना चाहिए। इस सन्दर्भ में यह कह दिया जाता है कि वेद संस्कृत भाषा में है और संस्कृत आर्यावर्त्त की भाषा है इसलिए वेद का उद्भव संस्कृत में होने से देश-विशेष की भाषा में हुआ। ऐसा क्यों? हमारा निवेदन है कि प्रथम तो वेद भाषा हूबहू संस्कृत है ऐसा कहना उचित नहीं। इनमें कुछ सूक्ष्म अन्तर है। प्रसिद्ध विद्वान् पंडित रधुनन्दन शर्मा ने इन्हें निम्न प्रकार निरूपित किया है।

(१) वेद भाषा का व्याकरण संस्कृत भाषा से भिन्न है। संस्कृत में अकारान्त पुल्लिंग द्विवचन में 'औ' होता है किन्तु वेद मे 'आ' है।

(२) वेद में एक लकार अधिक है जिसे 'लेट लकार' कहते हैं।

(३) वेद भाषा में एक अक्षर 'ळ' उपस्थित है जो संस्कृत में नहीं है।

(४) वेद भाषा अपना अर्थ स्वरों से पुष्ट करती है, यह कौशल संसार की किसी भाषा में नहीं है।

इस प्रकार यह कहना समीचीन होगा कि वेद की अपनी भाषा है। वही आदिम मानव ने सीखी और बोलचाल में वही व्यवहृत हुई। इसी में अतीव न्यून भिन्नता होने पर संस्कृत कहलायी। और पृथिवी पर पायी जाने वाली सभी भाषाएँ इसी से निकली। वेद भाषा और संस्कृत को एक मानने पर भी वेद का किसी देश विशेष में होना सिद्ध नहीं होता क्योंकि आदिम भाषा जिसमें वेद का प्रकाश हुआ वह वेद भाषा संस्कृत थी जिसे बाद में आर्यावर्त्त में यथावत् प्रयोग के कारण सुरक्षित रख लिया गया। परन्तु जब यहाँ से मानव समुदाय विश्व भर में फैले तो शनैःशनैः अपभ्रंश के कारण अन्यान्य भाषाओं का जन्म हुआ ठीक उसी प्रकार से जैसे कि आर्यावर्त्त में भी विभिन्न भाषाओं यथा हिन्दी, कन्नड़, तेलुगू, तमिल आदि का जन्म हुआ। हाँ! यह अवश्य है कि संस्कृत को यथावत् रूप में सुरक्षित रखने में आर्यावर्त्तवासी सफल रहे। इसका कारण यह रहा कि वेद को भी सुरक्षित रखने में आर्यावर्त्त के निवासी ही सफल रहे।

द्वितीय बात यह कही जाती है और जैसा पूर्व में हमने भी कहा है कि ईश्वरीय ज्ञान में किसी समुदाय विशेष का उल्लेख न होना चाहिए परन्तु वेद में 'आर्यों' का स्थान-स्थान पर उल्लेख है।

यथा- 'अहम् भूमिम् अददाय आर्याय' मैं यह भूमि आर्यों के लिए देता हूँ।

इसका समाधान यह है कि वेद में 'आर्य' का प्रयोग गुणवाचक है। श्रेष्ठ मनुष्यों की संज्ञा आर्य है। अथवा 'आर्य' ईश्वर के सभी पुत्र-पुत्री आर्य हैं। वेद में इसी अर्थ में आर्य आता है। भौगोलिक सीमाओं से घिरे आर्यावर्त्त देशस्थ निवासी आर्यों का यहाँ उल्लेख समझना उचित नहीं। देश व राज्य का अस्तित्व में आना अर्थात् एक भूभाग विशेष को आर्यावर्त्त कहना व उसके अन्तर्गत रहने वालों को आर्य कहना यह सब वेद के आविर्भाव के पश्चात् की घटनाएँ हैं। अतः यह कहना कि वेद में समुदाय विशेष का उल्लेख है उचित नहीं है।

– अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाब बाग

CARRY ON MISSY
Dollar
Missy
CHIC CASUALS
CHURIDAR | ANKLE LENGTH | CAPRI
Chitrangada Singh
Over 85 shades
| www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at all leading shopping portals
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 October-2022 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2021-2023

पदार्थ नष्ट अर्थात् अदृष्ट होते हैं परन्तु अभाव किसी का नहीं होता। इसी प्रकार अदृश्य होने से जीव का भी अभाव न मानना चाहिये। जब जीवात्मा सदेह होता है तभी उस की प्रकटता होती है। जब शरीर को छोड़ देता है तब यह शरीर जो मृत्यु को प्राप्त हुआ है वह जैसा चेतनयुक्त पूर्व था वैसा नहीं हो सकता।

- सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास १२ पृष्ठ ३९८

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर